RNI No. : UPBIL/25/A0683

www.vicharsetu.com

वर्ष-01 | अंक-04 | मई-जून 2026 | पृष्ठ संख्या-44

मूल्य ₹ 40

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक

प्रयागराज से प्रकाशित

भद्रलोक में भगवा परचम

विसे
विचार से विश्वास तक

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

राज, समाज, साहित्य, संस्कृति, कला एवं पर्यटन की राष्ट्रीय पत्रिका/समाचार पत्र

आप भी अपना विज्ञापन देकर कारोबार को बढ़ाएं

हर तस्वीर एक कहानी बताती है और हम अपनी पत्रिका से लाखों को बताते हैं। हम आपके लिए ऐसी तस्वीरें लेकर आए हैं जो बिना किसी भेदभाव के वास्तविक दुनिया और लोगों के बारे में सच्चाई बताती है।

हमारे साथ विज्ञापन करके अपने व्यवसाय को दें नई उड़ान

विज्ञापन की दरें :-

बैक कवर-21,000/-	फुल पेज- 11,000/-
फ्रंट इनर कवर-15,000/-	हाफ पेज- 6,000/-
बैक इनर कवर-15,000/-	क्वाटर पेज-3,000/-

Follow us

विचार सेतु
विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय : 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा,
प्रीतम नगर, धूमनगंज,
प्रयागराज -211011

Mob. No. 9598163216-7007044100
Website: www.vicharsetu.com
e-Mail: vicharsetu2024@gmail.com

अंदर

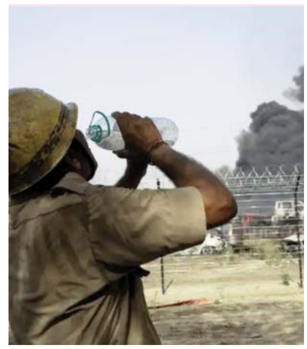

06

पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी भगवामय

देश की राजनीति अंगड़ाई ले रही है। हर चुनाव नई कहानी लिख रहा है। बीते एक दशक में नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व ने भाजपा को उस मुकाम पर पहुंचाया....

10

'हार' के परदे के पीछे छिपी बीजेपी की रणनीतिक 'जीत'

भारतीय लोकतंत्र की सबसे दिलचस्प विशेषताओं में से एक यह है कि यहां राजनीतिक घटनाएं अक्सर अपने प्रत्यक्ष अर्थ से ...

14

ऋतुओं को निगल रहा प्रदूषण, बदलता मौसम,घटता जीवन

भारत में सदियों से छह ऋतुओं-बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर का अपना एक क्रम रहा है। हर ऋतु अपने ...

16

आरुषि हेमराज केस अनसुलझा सच

देश की सबसे चर्चित मर्डर मिस्ट्री। आरुषि-हेमराज हत्याकांड। एक दशक तक मामला सुर्खियों में रहा। नई-नई थ्योरी गढ़ी गई। पुलिस और जांच एजेंसियों ने सिर ...

42

इमरान हाशमी की इस हसीना का 21 साल में बदला लुक

इमरान हाशमी की ऐसी काफी सारी फिल्में है और गाने हैं जो लोगों के बीच में आज भी काफी पॉप्युलर है।...

18

राघव चड्ढा एंड पार्टी का भाजपा में जाना राजनैतिक या निजी मजबूरी

भारतीय संसदीय लोकतंत्र के पतन में एक अध्याय और जुड़ गया। राघव चड्ढा सहित सात राज्यसभा सांसद 'आप' का त्याग कर...

30

आवाम का ध्यान भटकाने की तेज होती सियासत

राजनीति में खासकर, चुनावों के समय मुद्दों का यह बदलाव नया नहीं है। इंदिरा गांधी युग में गरीबी हटाओ, वीपी सिंह युग में मंडल तो कांशीराम युग में 85-15 जैसे...

विचार सेतु

वर्ष-01, अंक-04, मई-जून 2026

RNI No. : UPBIL/25/A0683
पृष्ठ संख्या-44, मूल्य- ₹ 40

सम्पादक : रेखा तिवारी

प्रधान सम्पादक : प्रदीप तिवारी, एडवोकेट
कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार

संरक्षक मण्डल
पदमश्री डॉ. सुनील जोगी, प्रेम जन्मेजय, रविनंदन सिंह, हर्ष वर्धन त्रिपाठी, डॉ. धनंजय चोपड़ा

समन्वय संपादक : शिवा शंकर पाण्डेय
राजनैतिक संवाददाता : भास्कर मिश्रा
सांस्कृतिक संवाददाता : राजेश ओझा

राज्य प्रतितिधि
उत्तर प्रदेश : भानुकर मिश्र
बिहार : डॉ. चंद्रकांत भट्ट
मध्य प्रदेश : सुमित ओरछा
दिल्ली/एनसीआर : काशी शर्मा
पंजाब : विजय गर्ग
राजस्थान : गगन अग्रवाल
उत्तराखंड : ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
हरियाणा : गजेन्द्र सिंह 'दहिया'
महाराष्ट्र : डॉ. मोतीलाल गुप्त 'आदित्य'
उड़ीसा : डॉ. रजनीकांत मिश्र
असम : त्रिदीप कलिता
त्रिपुरा : तनुज शाह
पश्चिम बंगाल : मानवेंद्र शर्मा

डिजाइन एवं प्रोडक्शन
एनएम मीडिया सॉल्यूशंस (9717177725)

विधिक सलाहकार
जयवर्धन त्रिपाठी, आदर्श पराशर
अधिवक्ता इलाहाबाद उच्च न्यायालय,

छायाकार : संजय सागर, **अमित शर्मा**

पंजीकृत कार्यालय - 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा, प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज 211011
फोन: 9598163216,7007044100
9415189919
वेब : www.vicharsetu.com
ई-मेल : vicharsetu2024@gmail.com

स्वामी और प्रकाशक रेखा तिवारी द्वारा आइडियल ग्राफिक्स 48/136/2, पानदरीबा, शाहगंज, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश-211003 से प्रकाशित।

संपादक-रेखा तिवारी*
मुद्रक : आइडियल ग्राफिक्स

इस पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं

लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित

*इस चयन में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद प्रयागराज न्यायालय के अधीन होंगें।

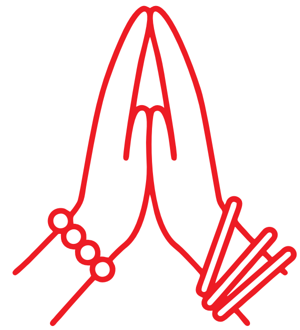

बदलते दौर की चुनौतियां और संभावनाएं–वैश्विक परिदृश्य से युवा भारत तक

मई-जून का यह कालखंड हर वर्ष अपने साथ बदलाव का संदेश लेकर आता है। प्रकृति अपने स्वरूप में परिवर्तन करती है, राजनीति नए समीकरण गढ़ती है और समाज नई दिशाओं की तलाश करता है। वर्ष 2026 का यह समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि एक ओर वैश्विक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, तो दूसरी ओर भारत के भीतर भी राजनीतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्तर पर कई नई चुनौतियां सामने आ रही हैं। ऐसे समय में '**विचार सेतु**' का यह अंक केवल घटनाओं का संकलन नहीं, बल्कि उन प्रवृत्तियों की पड़ताल है जो भविष्य की दिशा तय करेंगी।

वैश्विक परिदृश्य: अस्थिरता के बीच संतुलन की तलाश

आज का विश्व एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। आर्थिक अस्थिरता, भू-राजनीतिक तनाव, तकनीकी क्रांति और जलवायु परिवर्तन—ये सभी मिलकर एक जटिल वैश्विक तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं। महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा अब केवल सैन्य या आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही, बल्कि तकनीक, डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक फैल चुकी है।

ऊर्जा संकट और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान ने विकासशील देशों के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। वहीं, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अब केवल चर्चा का विषय नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव का हिस्सा बन चुका है—कहीं बाढ़, कहीं सूखा, तो कहीं असामान्य तापमान।

भारत जैसे देश के लिए यह समय अवसर और चुनौती दोनों लेकर आया है। एक ओर वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका मजबूत हुई है, वहीं दूसरी ओर घरेलू स्तर पर संतुलन बनाए रखना एक बड़ी जिम्मेदारी है। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को व्यवहार में उतारने का यह सही समय है, पर इसके लिए दूरदर्शिता और ठोस नीतिगत निर्णय आवश्यक हैं।

विधान सभा चुनाव 2026: लोकतंत्र का नया परीक्षण

भारत में लोकतंत्र केवल एक व्यवस्था नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है। वर्ष 2026 के विधान सभा चुनाव इस परंपरा की नई परीक्षा के रूप में सामने आए हैं। इन चुनावों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मतदाता अब पहले से अधिक जागरूक और अपेक्षाओं से भरा हुआ है।

चुनावी मुद्दों में अब केवल जातीय और क्षेत्रीय समीकरण ही नहीं, बल्कि विकास, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दे प्रमुखता से उभर रहे हैं। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के प्रभाव ने चुनावी रणनीतियों को पूरी तरह बदल दिया है। अब हर मतदाता तक सीधे पहुंचना संभव है, लेकिन इसके साथ ही गलत सूचनाओं का खतरा भी बढ़ा है।

इन चुनावों ने यह भी संकेत दिया है कि राजनीतिक दलों को केवल वादों से नहीं, बल्कि कार्यों के आधार पर जनता का विश्वास जीतना होगा। युवा मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी इस बदलाव का सबसे बड़ा संकेत है। वे न केवल वोट दे रहे हैं, बल्कि सवाल भी पूछ रहे हैं—और

यही लोकतंत्र की असली ताकत है।

मौसम और पर्यावरणः चेतावनी का स्पष्ट संकेत

मई-जून का महीना भारत में प्रचंड गर्मी के लिए जाना जाता है, लेकिन हाल के वर्षों में तापमान के रिकॉर्ड जिस तरह टूट रहे हैं, वह चिंता का विषय है। हीटवेव की बढ़ती घटनाएं, जल संकट और पर्यावरणीय असंतुलन ने जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया है।

प्रयागराज सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में तापमान का असामान्य बढ़ना केवल मौसमी बदलाव नहीं, बल्कि जलवायु संकट का संकेत है। यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि विकास की दौड़ में कहीं हमने प्रकृति के साथ संतुलन तो नहीं खो दिया।

सरकारों के स्तर पर नीतियां बन रही हैं, लेकिन आम नागरिक की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जल संरक्षण, वृक्षारोपण और ऊर्जा के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे छोटे-छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। यदि अभी नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थिति और कठिन हो सकती है।

युवा वर्गः अवसरों के साथ चुनौतियों का द्वंद्व

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसका युवा वर्ग है। लेकिन यह ताकत तभी सार्थक हो सकती है, जब उसे सही दिशा और अवसर मिलें। आज का युवा तकनीकी रूप से सक्षम है, जानकारी से परिपूर्ण है और दुनिया को बदलने का जज्बा रखता है। फिर भी, उसके सामने कई गंभीर चुनौतियां हैं—बेरोजगारी, कौशल की कमी, मानसिक दबाव और सामाजिक असुरक्षा। डिजिटल युग ने जहां अवसरों के नए द्वार खोले हैं, वहीं प्रतिस्पर्धा को भी कई गुना बढ़ा दिया है।

आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा प्रणाली को रोजगारपरक बनाया जाए, कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए और युवाओं को नवाचार के लिए प्रेरित किया जाए। साथ ही, मानसिक स्वास्थ्य को लेकर भी जागरूकता बढ़ानी होगी। सफलता की अंधी दौड़ में युवा कहीं खुद को खो न दें, यह सुनिश्चित करना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

समन्वय ही समाधान

वर्तमान समय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हर क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। वैश्विक घटनाएं स्थानीय प्रभाव डालती हैं, राजनीतिक निर्णय सामाजिक बदलाव लाते हैं और पर्यावरणीय संकट आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। ऐसे में आवश्यक है कि हम समग्र दृष्टिकोण अपनाएं। केवल सरकारों या संस्थाओं पर निर्भर रहने के बजाय प्रत्येक नागरिक को अपनी भूमिका समझनी होगी।

'विचार सेतु' का यह अंक इसी समन्वय की भावना को आगे बढ़ाने का प्रयास है—जहां विचारों का आदान-प्रदान हो, संवाद की परंपरा मजबूत हो और समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकें।

अंततः, यह समय निराशा का नहीं, बल्कि जागरूकता और सक्रियता का है। चुनौतियां बड़ी हैं, लेकिन संभावनाएं उससे भी अधिक व्यापक हैं। यदि हम सामूहिक रूप से प्रयास करें, तो न केवल वर्तमान संकटों का समाधान संभव है, बल्कि एक सशक्त, समृद्ध और संतुलित भविष्य की नींव भी रखी जा सकती है।

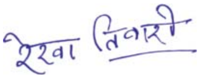

रेखा तिवारी

पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी भगवामय

अब यूपी, पंजाब पर रहेगी नजर

भास्कर मिश्र

बिहार के रास्ते निकला भाजपा का चुनावी रथ पश्चिम बंगाल में परचम बुलंद कर चुका है। 2026 के विधानसभा चुनावों में पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य रहा, जहां पर भारतीय जनता पार्टी पहली बार सत्ता का नेतृत्व करने जा रही है। पश्चिम बंगाल में 1977 से पहले तक कांग्रेस ने एकछत्र राज किया। 1977 से लेकर 2011 तक वाममोर्चा सत्ता पर काबिज रहा और 2011 से अब तक (यानी 2026 तक) तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने शासन की बागडोर संभाली।

देश की राजनीति अंगड़ाई ले रही है। हर चुनाव नई कहानी लिख रहा है। बीते एक दशक में नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व ने भाजपा को उस मुकाम पर पहुंचाया, जहां से पूरा देश भगवामय हो गया है। अखबारी भाषा में कहें तो सियासी नक्शे पर -पूरब से पश्चिम तक सिर्फ भगवा ही नजर आता है। 2026 के विधानसभा चुनाव परिणामों ने भाजपा को नए शीर्ष पर पहुंचा दिया है। इस चुनाव ने 2018 का भी रिकार्ड ध्वस्त कर दिया है। अब देशभर के 12 राज्यों में भाजपा की सरकार है, तो आठ राज्यों में भाजपा या सहयोगी दल सत्ता में है। देश के इन बीस राज्यों में भारत की कुल आबादी का 76 फीसदी लोग रहते हैं। बंगाल चुनाव परिणाम की बात हो और बिहार का जिक्र न करें तो थोड़ा अधूरा सा लगता है। बिहार के विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत महज एक राज्य की विजय नहीं थी, बल्कि पूर्वी भारत में सियासी विस्तार की शुरूआत थी। वह तारीख थी 14 नवंबर, 2025। स्थान था भारतीय जनता पार्टी का मुख्यालय (नई दिल्ली)।

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था - 'गंगा बिहार से होकर बंगाल जाती है और बिहार की जीत ने बंगाल में जीत का रास्ता बना दिया है।' 14 नवंबर, 2025 को कही गई यह बात चार मई, 2026 को अक्षरशः सच साबित हुई और आधी रात होने तक भाजपा ने 206 सीटों पर जीत हासिल कर ली थी। पश्चिम बंगाल की राजनीति में यह तारीख सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गई। यह, वही भाजपा है जो 2011 के बंगाल विस चुनाव में अपना खाता भी नहीं खोल पाई थी। 15 वर्ष पहले भाजपा ने पश्चिम बंगाल की 288 सीटों पर चुनाव लड़ा था। भाजपा की इस प्रचंड जीत के साथ ही पश्चिम

बंगाल में 'ममता युग' इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। 2026 के चुनाव में भाजपा के खाते में जहां 206 सीटें आईं तो टीएमसी को 80 सीटें मिलीं। आजादी के बाद से 1977 तक एकछत्र राज करने वाली कांग्रेस दो सीटों पर सिमट गई। इसके अलावा आम जनता उन्नयन पार्टी ने दो, सीपीआई (एम) ने एक और आल इंडिया सेकुलर फ्रंट ने भी बंगाल चुनाव में एक सीट जीती है। एक सीट फालता पर 21 मई को फिर वोटिंग होगी।

भवानीपुर से ममता बनर्जी चुनाव हारीं

ममता बनर्जी अपनी भवानीपुर की सीट भी नहीं बचा पाईं। इस सीट से भारतीय जनता पार्टी के नेता सुवेंदु अधिकारी ने ममता बनर्जी को हराया है। चुनाव आयोग की वेबसाइट के मुताबिक, भवानीपुर सीट पर सुवेंदु अधिकारी ने ममता बनर्जी को 15,105 वोटों से हराया है। सुवेंदु नंदीग्राम सीट से भी चुनाव मैदान में थे, यहां से भी बीजेपी नेता ने जीत हासिल की है। सुवेंदु अधिकारी को 73463, ममता बनर्जी को 58350 वोट मिले। जीत के बाद सुवेंदु अधिकारी ने कहा कि ममता बनर्जी को हराना बेहद जरूरी था। यह ममता बनर्जी का राजनीति से रिटायरमेंट है।

कांग्रेसी दिग्गज अधीर रंजन चौधरी हारे

बहरामपुर सीट से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अधीर रंजन चौधरी को पराजय का सामना करना पड़ा। भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार शुभ्रत मैत्रा ने उन्हें 17,548 मतों के अंतर से हराया। इस सीट पर बड़ा राजनीतिक उलटफेर देखने को मिला। इस चुनाव में भी एम फैक्टर हावी रहा। यहां की मुस्लिम बहुल सीटों पर टीएमसी को जीत मिली। उत्तर 24 परगना के देगंगा, हाड़ोवा और बशिरहाट क्षेत्र में भी पार्टी के मुस्लिम उम्मीदवारों ने जीत का परचम लहराया। दक्षिण 24 परगना में कैनिंग पूर्व और मगराहाट पश्चिम जैसी सीटों पर भी पार्टी ने यही सामाजिक समीकरण देखने को मिला। कोलकाता, मुर्शिदाबाद, और मालदा जैसे जिलों में पार्टी के ज्यादातर विजयी उम्मीदवार मुस्लिम समुदाय से आते हैं।

यह चुनाव नहीं,लूट हैः ममता बनर्जी

चुनावों में मिली भारी पराजय के लिए ममता बनर्जी ने पारदर्शिता पर सवाल उठाए। कहा, यह चुनाव नहीं बल्कि लूट है। भवानीपुर काउंटिंग सेंटर से बाहर निकलते हुए ममता ने दावा किया कि भाजपा ने 100 से ज्यादा सीटें गलत तरीके से हासिल की हैं। उन्होंने चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए। कहा कि उन्होंने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनोज अग्रवाल से शिकायत की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने केंद्रीय बलों और केंद्र सरकार पर भी आरोप लगाते हुए कहा कि पूरी प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं रही, हालांकि उन्होंने भरोसा जताया कि उनकी पार्टी वापसी करेगी।

जनता की शक्ति से खिला कमलः मोदी

चुनाव परिणामों के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान दिए गए भाषणों को एक्स पर शेयर किया। कहा-पश्चिम बंगाल और असम में लगभग 93 प्रतिशत मतदान, और इसके साथ

ही तमिलनाडु, पुडुचेरी तथा केरल में दर्ज किए गए मतदान के नए रिकॉर्ड, भारतीय लोकतंत्र की एक सुंदर तस्वीर पेश करते हैं। नरेंद्र मोदी ने जनता और पार्टी कार्यकताओं का आभार जताया। कहा, पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव ऐतिहासिक रूप से याद किए जाएंगे। यह जनता की शक्ति की जीत है और सुशासन की राजनीति की सफलता का प्रतीक है। उन्होंने पश्चिम बंगाल की जनता को नमन करते हुए कहा कि लोगों ने भाजपा को मजबूत जनादेश दिया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की जनता का आभार जताया है। सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए लिखा कि बंगाल की जनता को कोटि-कोटि नमन। अनुसार, यह प्रचंड जनादेश भय, तुष्टीकरण और घुसपैठियों के समर्थकों के खिलाफ जनता का स्पष्ट संदेश है।

असम में 'सुपर बहुमत' के साथ लौटी भाजपा

असम विधानसभा चुनाव 2026 में भाजपा-नीत गठबंधन ने अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए 126 में से 102 सीटों पर कब्जा जमाकर ऐतिहासिक जनादेश हासिल किया है। इस जीत के साथ गठबंधन ने लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की है और राज्य की राजनीति में नया रिकॉर्ड कायम किया है। चुनाव आयोग के आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 82 सीटों पर जीत दर्ज की। उसके सहयोगी दलों में असम गण परिषद (एजीपी) और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) ने 10-10 सीटें जीतकर गठबंधन की बढ़त को निर्णायक बनाया। कुल मिलाकर गठबंधन का आंकड़ा 102 तक पहुंच गया। विपक्ष की बात करें तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 19 सीटों से संतोष करना पड़ा। ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एयूआईडीएफ) महज 2 सीटों पर सिमट गई। कांग्रेस गठबंधन में शामिल राइजर दल ने अपनी स्थिति सुधारते हुए 2 सीटें जीतीं, जबकि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को 1 सीट पर सफलता मिली। मत प्रतिशत के लिहाज से भी भाजपा आगे रही। भाजपा को लगभग 37.81% वोट मिले, जबकि कांग्रेस को 29.84% वोट प्राप्त हुए। यह जनादेश इसलिए भी खास है क्योंकि अतीत में कांग्रेस ने 2001, 2006 और 2011 में लगातार सरकार बनाई थी, लेकिन उसे कभी इतनी बड़ी जीत नहीं मिली। भाजपा ने इस बार सत्ता विरोधी रुझान को अपने पक्ष में मोड़ते हुए उसे सत्ता समर्थन लहर में तब्दील कर दिया।

हिमंत सरमा भारी अंतर से जीते, गोगोई हारे

असम विधानसभा चुनाव 2026 में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा लगातार 6वीं बार बड़े अंतर से जालुकबारी विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीत गए हैं। डॉ. सरमा ने कांग्रेस की बिदिशा नेओग को 89434 मतों के अंतर से पराजित किया है। मुख्यमंत्री डॉ. सरमा को कुल 127151 मत मिले हैं जबकि बिदिशा नेओग को कुल 37717 मत प्राप्त हुए। उल्लेखनीय है कि डॉ. सरमा पहली बार 2001 में विधानसभा चुनाव में तत्कालीन असम के गृह मंत्री भृगु फूकन को पराजित कर जीत हासिल की थी। तबसे लेकर आज तक इस क्षेत्र से डॉ. सरमा लगातार जीतते आ रहे हैं। दूसरी तरफ असम प्रदेश कांग्रेस पार्टी (एपीसीसी) के अध्यक्ष एवं सांसद गौरव गोगोई ने आज घोषित असम विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद अपनी हार स्वीकार कर ली है। उन्होंने एक आधिकारिक बयान में कहा कि वे राज्य की जनता के जनादेश को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं। साथ ही उन सभी मतदाताओं का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन के प्रत्याशियों पर अपना विश्वास जताया।

पुडुचेरीः एनडीए की सत्ता बरकरार, 30 में18 सीटों पर जीत

पुडुचेरी विधानसभा चुनाव 2026 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने स्पष्ट बहुमत हासिल करते हुए सत्ता बरकरार रखी है। 30 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा-नीत गठबंधन को 18 सीटें, जबकि कांग्रेस गठबंधन को 6 सीटें मिलीं। इसके अलावा अन्य दलों और निर्दलियों के खाते में 6 सीटें गई हैं। चुनाव परिणामों में कई सीटों पर कड़ा मुकाबला देखने को मिला, वहीं कुछ सीटों पर निर्णायक जीत भी दर्ज हुई। सबसे चर्चित मुकाबला थट्टांचावडी (सीट संख्या-9) में रहा, जहां मुख्यमंत्री एन. रंगास्वामी ने शानदार जीत दर्ज की। ऑल इंडिया एन.आर. कांग्रेस (एआईएनआरसी) के रंगास्वामी को 10,024 वोट मिले। उनके प्रतिद्वंद्वी ई. विनायगम (नेयम मक्कल कझगम) को 5,583 वोट मिले। यहां हार-जीत का अंतर 4,441 वोट रहा। रंगास्वामी का यह राजनीतिक दबदबा इसलिए भी अहम है क्योंकि वे पहले भी चार बार (2001-06, 2006-08, 2011-16 और 2021 से अब तक) पुडुचेरी के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। इसके अलावा एम्बालम और मन्नादीपेट सीटों पर भी बड़े अंतर से जीत दर्ज की गई, जिसने ठउ्अ की बढ़त को और मजबूत किया। इस चुनाव में तमिलागा वेत्री कषगम (टीवीके) ने भी उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए 2 सीटों पर जीत हासिल की। मनवेली सीट से बी. रामू और

तिरुभुवनई सीट से साई जे. सरवनन कुमार ने चुनावी मैदान मारा।

तमिलनाडुः एक्टर थलापति की 'ब्लॉकबस्टर' सियासी एंट्री

विजय की टीवीके 107 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी, द्रविड़ का वर्चस्व टूटा

करीब 6 दशकों से द्रमुक-अन्नाद्रमुक के बीच सिमटी तमिलनाडु की राजनीति में इस बार (विधानसभा चुनाव 2026) बड़ा उलटफेर हुआ है। अभिनेता से नेता बने जोसेफ विजय की पार्टी तमिलागा वेत्री कषगम (टीवीके) ने पहली ही चुनावी पारी में 107 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनते हुए सियासी परिदृश्य बदल दिया। स्पष्ट बहुमत से कुछ कदम दूर रहते हुए भी टीवीके का प्रदर्शन ऐतिहासिक माना जा रहा है।चुनाव आयोग के नतीजों के अनुसार, द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) और उसके सहयोगियों को बड़ा झटका लगा है और उनका आंकड़ा घटकर 66 सीटों पर सिमट गया। मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने हार स्वीकार कर ली। वहीं अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (एआईएडीएमके) के नेतृत्व वाला गठबंधन 53 सीटों पर सिमटकर तीसरे नंबर पर खिसक गया। अन्य दल कोई खास प्रभाव नहीं छोड़ सके और शून्य पर रहे। लगभग 59-60 वर्षों से चली आ रही द्रविड़ दलों की अदला-बदली की परंपरा इस चुनाव में टूटती दिखी। पहली बार चुनाव मैदान में उतरी टीवीके ने मतदाताओं के बीच एक नए विकल्प के रूप में उभरते हुए व्यापक समर्थन हासिल किया।

केरल में वामपंथी युग का अवसान, यूडीएफ की वापसी

102 सीटों के साथ दो-तिहाई बहुमत, 10 साल बाद सत्ता में लौटा कांग्रेस गठबंधन

कोच्चि। केरल की राजनीति में ऐतिहासिक बदलाव दर्ज हुआ है। जिस राज्य में 1957 में ईएमएस नंबूदिरीपाद के नेतृत्व में पहली वामपंथी सरकार बनी थी, वहीं अब वामपंथी सत्ता का प्रभावी अंत होता दिख रहा है। कभी गैर-कांग्रेसवाद की धुरी रहा केरल अब पूरी तरह नई राजनीतिक दिशा में मुड़ गया है।

वाम दलों ने केरल से शुरूआत कर देश के कई हिस्सों में अपनी पकड़ मजबूत की थी। पश्चिम बंगाल में तो 1977 से लगातार 34 वर्षों तक मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का शासन रहा। लेकिन मौजूदा जनादेश ने इस लंबे राजनीतिक प्रभाव को निर्णायक झटका दिया है।

यूडीएफ की ऐतिहासिक जीत

कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) ने 102 सीटें जीतकर दो-तिहाई से अधिक बहुमत हासिल किया है। यह जीत 10 वर्षों बाद सत्ता में उसकी मजबूत वापसी का संकेत है।

सीटों के ब्योरे पर नजर डालें तो कांग्रेस को 63 सीटें मिलीं। उसके सहयोगी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) ने 22 सीटें जीतीं, जबकि केरल कांग्रेस को 7 और रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी को 3 सीटें मिलीं। इसके अलावा केरल कांग्रेस (जैकब), रिवोल्यूशनरी मार्क्सिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया और कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट पार्टी (केरल स्टेट कमेटी) को एक-एक सीट पर जीत मिली।

भाजपा ने भी खोला खाता

भारतीय जनता पार्टी ने इस चुनाव में पहली बार केरल विधानसभा में प्रवेश करते हुए 3 सीटें जीतकर राजनीतिक उपस्थिति दर्ज कराई है। भाजपा की ओर से राजीव चंद्रशेखर ने 4900 से अधिक मतों के अंतर से जीत दर्ज कर उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। कोल्लम जिले की चथन्नूर सीट से बी.बी. गोपकुमार 4,398 वोटों से विजयी रहे।

वी. मुरलीधरन ने कझाक्कूट्टम सीट पर महज 428 वोटों के अंतर से रोमांचक जीत हासिल की। दूसरी तरफ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मुख्यमंत्री पद के दावेदार वी.डी. सतीसन ने परवूर सीट से जीत हासिल की। वहीं रमेश चेन्निथला हरिपाड से विजयी रहे, जिससे नेतृत्व की दौड़ और दिलचस्प हो गई है।

‘हार’ के परदे के पीछे छिपी बीजेपी की रणनीतिक ‘जीत’

महिला आरक्षण बिल

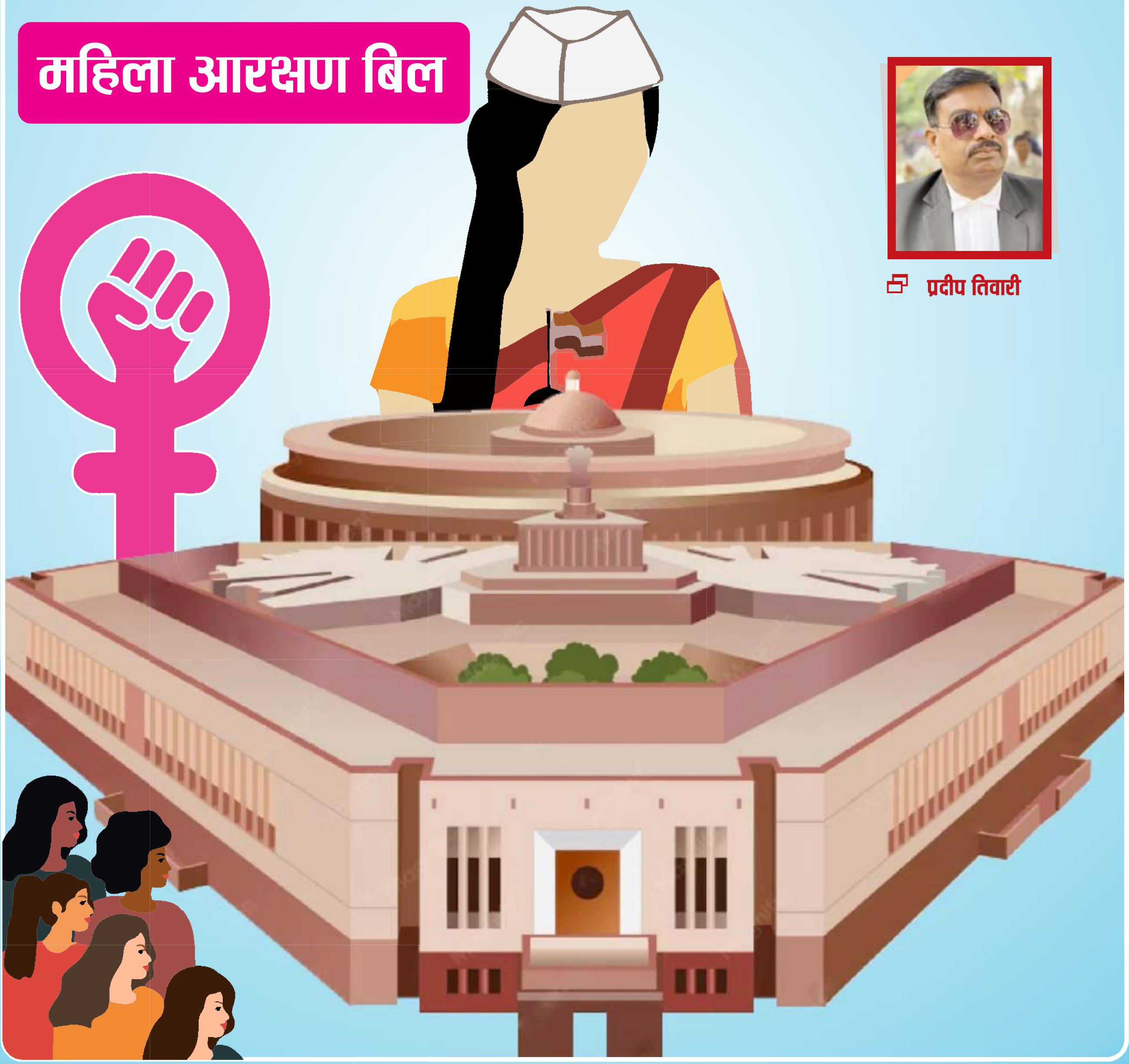

प्रदीप तिवारी

भारतीय लोकतंत्र की सबसे दिलचस्प विशेषताओं में से एक यह है कि यहां राजनीतिक घटनाएं अक्सर अपने प्रत्यक्ष अर्थ से कहीं अधिक, गहरे संकेत देती हैं। महिला आरक्षण बिल इसी श्रेणी का एक ऐसा विषय है, जिसने न केवल संसद के भीतर बल्कि देश की व्यापक राजनीतिक चेतना में भी एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। पहली नजर में यदि किसी राजनीतिक परिस्थिति में इस बिल के क्रियान्वयन में देरी या जटिलता दिखाई देती है, तो इसे सत्ताधारी दल, विशेषकर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की विफलता के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन, गहराई से विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि इस तथाकथित 'हार' के भीतर एक सुनियोजित और दूरगामी 'जीत' भी निहित है।

ऐतिहासिक संदर्भ और अधूरी यात्रा

महिला आरक्षण का विचार भारत में नया नहीं है। 1996 में पहली बार संसद में इसे पेश किया गया, लेकिन यह बार-बार राजनीतिक सहमति के अभाव में अटकता रहा। 2010 में राज्यसभा से पारित होने के बावजूद यह लोकसभा में लंबित रह गया। पंचायतों और शहरी निकायों में महिलाओं को 33% आरक्षण मिलने के बाद यह अपेक्षा बढ़ी कि संसद और विधानसभाओं में भी इसी तरह का प्रावधान होगा। इस लंबी यात्रा में एक बात स्पष्ट रही कि हर राजनीतिक दल सैद्धांतिक रूप से महिला आरक्षण का समर्थन करता है, लेकिन जब इसे लागू करने की बात आती है, तो राजनीतिक गणित और सामाजिक समीकरण सामने आ जाते हैं।

बीजेपी का हस्तक्षेप: प्रतीकवाद से रणनीति तक

बीजेपी ने महिला आरक्षण को केवल एक विधायी मुद्दा नहीं रहने दिया, बल्कि इसे एक व्यापक राजनीतिक और सामाजिक अभियान का हिस्सा बना दिया। 'नारी शक्ति' को केंद्र में रखकर पार्टी ने महिला सशक्तिकरण को अपने राजनीतिक विमर्श का मुख्य स्तंभ बनाया। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार ने कई ऐसी योजनाएं लागू कीं, जिनका सीधा लाभ महिलाओं को मिला। इससे महिला मतदाताओं के बीच एक सकारात्मक धारणा बनी। ऐसे में महिला आरक्षण बिल को आगे बढ़ाना केवल एक कानून बनाने की कोशिश नहीं, बल्कि उस धारणा को संस्थागत रूप देने का प्रयास भी था।

'हार' का भ्रम: क्या वास्तव में पराजय?

यदि बिल के क्रियान्वयन में देरी होती है, जैसे परिसीमन या अन्य तकनीकी कारणों के चलते, तो विपक्ष इसे बीजेपी की विफलता के रूप में प्रस्तुत करता है। लेकिन यह आकलन अधूरा है। राजनीति में कई बार परिणाम से अधिक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। बीजेपी ने इस प्रक्रिया को इस तरह से गढ़ा है कि परिणाम चाहे जब आए, राजनीतिक लाभ उसके पक्ष में जाता रहे।

रणनीतिक 'जीत' के आयाम

1. नैतिक नेतृत्व की स्थापना

महिला आरक्षण जैसे मुद्दे पर स्पष्ट और मुखर समर्थन देकर बीजेपी ने खुद को नैतिक रूप से ऊँचे स्थान पर स्थापित किया है। यह संदेश गया कि पार्टी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए गंभीर है। इससे विपक्ष पर दबाव बना। उन्हें या तो समर्थन देना पड़ा या अपने विरोध को उचित ठहराना पड़ा।

2. विपक्ष की रणनीतिक उलझन

विपक्ष के भीतर महिला आरक्षण को लेकर एकरूपता का अभाव रहा है। कुछ दल ओबीसी

और अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए अलग कोटा की मांग करते हैं, जबकि कुछ इसे बिना शर्त लागू करने के पक्ष में हैं। बीजेपी ने इस विभाजन का लाभ उठाया। उसने एक सीधा प्रस्ताव रखकर खुद को निर्णायक और स्पष्ट दिखाया, जबकि विपक्ष आंतरिक मतभेदों में उलझा नजर आया।

3. महिला मतदाताः भविष्य की कुंजी

भारतीय राजनीति में महिला मतदाताओं की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। कई राज्यों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से अधिक हो चुका है। बीजेपी ने इस बदलाव को समय रहते पहचान लिया। महिला आरक्षण बिल को आगे बढ़ाकर पार्टी ने यह संकेत दिया कि वह महिलाओं को केवल मतदाता नहीं, बल्कि नीति-निमार्ता के रूप में भी देखती है। यह संदेश दीर्घकालिक राजनीतिक निवेश की तरह है।

4. एजेंडा सेटिंग की कला

राजनीति में सबसे बड़ी शक्ति एजेंडा तय करने की होती है। बीजेपी ने महिला आरक्षण को राष्ट्रीय बहस का केंद्र बना दिया। अब यह मुद्दा विपक्ष के लिए टालने योग्य नहीं रहा। चर्चा इस बात पर केंद्रित हो गई कि बिल कब लागू होगा, न कि इस पर कि इसे लागू करना चाहिए या नहीं। यह बदलाव अपने आप में एक बड़ी राजनीतिक जीत है।

5. संवैधानिक प्रक्रिया का कवच

बीजेपी ने बिल को परिसीमन जैसी प्रक्रियाओं से जोड़कर इसे एक संवैधानिक ढांचे में रखा।

इससे पार्टी को यह कहने का अवसर मिला कि देरी राजनीतिक नहीं, बल्कि प्रक्रिया-आधारित है। यह रणनीति आलोचना को कमजोर करती है और पार्टी की छवि को नियमों का पालन करने वाली संस्था के रूप में मजबूत करती है।

सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक लाभ का संगम

महिला आरक्षण बिल का प्रभाव केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। जब अधिक महिलाएं संसद और विधानसभाओं में पहुंचेंगी, तो नीति-निर्माण में विविधता आएगी और समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज को बेहतर प्रतिनिधित्व मिलेगा। बीजेपी ने इस सामाजिक परिवर्तन को अपने राजनीतिक एजेंडे के साथ जोड़कर एक संतुलन स्थापित किया है–जहाँ सुधार और राजनीति दोनों साथ चलते हैं।

संभावित जोखिम और सीमाएं

हालांकि यह रणनीति प्रभावी दिखती है, लेकिन इसके साथ कुछ जोखिम भी जुड़े हैं–

यदि क्रियान्वयन में अत्यधिक देरी होती है, तो जनता में निराशा बढ़ सकती है।

विपक्ष यदि एकजुट होकर वैकल्पिक प्रस्ताव लाता है, तो बीजेपी की बढ़त कम हो सकती है

सामाजिक न्याय के मुद्दों (जैसे ओबीसी आरक्षण) को नजरअंदाज करना राजनीतिक रूप से महंगा पड़ सकता है।

विपक्ष के लिए चुनौती

महिला आरक्षण बिल ने विपक्ष के सामने एक स्पष्ट चुनौती रख दी है। या तो वे एकजुट होकर ठोस रणनीति बनाएं या फिर बीजेपी के नैरेटिव को मजबूत होने दें।

विपक्ष को चाहिए कि महिला नेतृत्व को बढ़ावा दे

स्पष्ट और व्यवहारिक प्रस्ताव रखे। आंतरिक मतभेदों को दूर करे। अन्यथा यह मुद्दा पूरी तरह बीजेपी के पक्ष में चला जाएगा।

दीर्घकालिक राजनीति का मास्टरस्ट्रोक

महिला आरक्षण बिल को केवल एक विधायी प्रक्रिया के रूप में देखना इसकी राजनीतिक महत्ता को कम आंकना होगा। यह एक ऐसा मुद्दा है, जिसके माध्यम से बीजेपी ने न केवल अपनी विचारधारा को मजबूत किया, बल्कि भविष्य की राजनीति की दिशा भी तय करने की कोशिश की है।

इस परिप्रेक्ष्य में यदि इसे 'हार' कहा भी जाए, तो यह केवल सतही विश्लेषण होगा। वास्तविकता यह है कि यह एक ऐसी 'रणनीतिक जीत' है, जिसके प्रभाव आने वाले वर्षों में और स्पष्ट होंगे। भारतीय राजनीति में अक्सर कहा जाता है–'जो आज हार दिखती है, वही कल जीत की नींव बनती है।' महिला आरक्षण बिल इस कथन का एक सटीक उदाहरण बनता नजर आता है।

(लेखक इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वरिष्ठ अधिवक्ता एवं 'विचार सेतु' के प्रधान संपादक हैं)

सपा मुखिया अखिलेश यादव: क्या गठबंधन ही विकल्प है?

दीपक तिवारी

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक सवाल लगातार गूंज रहा है, क्या अखिलेश यादव के लिए सत्ता का रास्ता गठबंधन से होकर ही जाता है या सपा अकेले भी बाजी पलट सकती है? 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद भी इस तरह की सियासी अटकलबाजी शुरू हो गई थी। जहां सारे राजनीतिक दल यूपी की आगामी विधानसभा 2027 चुनाव की तैयारी में जुट गए हों तो इस तरह की चर्चा फिर से होना स्वाभाविक है। 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजों ने संकेत दिया कि अगर रणनीति सही हो तो दो तीन प्रमुख दलों का गठबंधन भाजपा के मजबूत किले में भी सेंध लगा सकता है। लोकसभा 2024 के चुनाव में समाजवादी पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस ने एक साथ मिलकर चुनाव लड़ा। इस गठबंधन को कई सीटों पर सीधा फायदा मिला। सपा के खाते में 37 सीटें आईं और कांग्रेस ने भी 6 सीटों पर जीत दर्ज की। कुल मिलाकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के गठबंधन ने 43 सीटें हासिल किया था। जबकि अकेले भाजपा के खाते में कुल 33 सीटें आई थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी यूपी में सबसे बड़े दल के रूप में सामने आई थी। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में जीत का असली खेल सीटों से ज्यादा वोट प्रतिशत पर निर्भर करता है।

एक नजर

भाजपा का पारंपरिक वोट शेयर - 40-45%
सपा का पारंपरिक वोट -30-32%
कांग्रेस व अन्य का पारंपरिक वोट -8-10%

जब ये वोट अलग-अलग रहते हैं तो भाजपा को फायदा मिलता है लेकिन जैसे ही सपा और कांग्रेस का वोट जुड़ता है यह आंकड़ा 38 से 40% तक पहुंच जाता है। जो सीधे मुकाबले में भाजपा को चुनौती देने के लिए काफी है यही कारण है कि 2024 में कई सीटों पर मुकाबला कांटे का रहा व गठबंधन को बढ़त मिली थी।

उत्तर प्रदेश में गठबंधन का मिला-जुला इतिहास

2017 का विधानसभा चुनाव

सपा- कांग्रेस गठबंधन बना लेकिन भाजपा ने 300+ सीटें जीतकर सत्ता हासिल कर ली।
कारण - ग्राउंड लेवल पर केमिस्ट्री की कमी। वोट का ट्रांसफर न हो पाना।

2019 का लोकसभा चुनाव

सपा -बसपा का गठबंधन हुआ। वोट शेयर बढ़ा, लेकिन सीटें उम्मीद से कम आईं।
कारण - कोर वोटर का पूरी तरह ट्रांसफर नहीं हो पाना।

2024 लोकसभा चुनाव

सपा -कांग्रेस गठबंधन ज्यादा प्रभावी दिखा।
कारण - सीमित सीटों पर फोकस बेहतर कोऑर्डिनेशन और भाजपा के खिलाफ एकजुट नैरेटिव।

इससे साफ है कि गठबंधन तभी काम करता है जब वोट ट्रांसफर और ग्राउंड सिंक्रोनाइजेशन मजबूत हो।

अखिलेश की नई रणनीति पीडीए + गठबंधन

समाजवादी पार्टी (सपा) सुप्रीमो अखिलेश यादव ने हाल के वर्षों में पीडीए (पिछड़ा +दलित+ अल्पसंख्यक) का नया फामूर्ला दिया है। यह सामाजिक समीकरण अगर सही तरीके से जमीनी स्तर पर लागू हो जाता है तो यह अपने आप में एक बड़ा 'इन -हाउस गठबंधन' बन जाता है। हालांकि, सवाल ये भी उठाए जा सकते हैं कि अगर पीडीए मजबूत है तो बाहरी किसी दल के गठबंधन की जरूरत क्यों? इसका जवाब भी आसान है। सपा का बेस वोट पीडीए मजबूत करता है। जबकि गठबंधन उसे अतिरिक्त वोट देता है। बशर्ते, उस दल का वोट ईमानदारी से ट्रांसफर हो जाए।

गठबंधन की चुनौतियां भी कम नहीं

'सियासी-पंडितों' का कहना है कि इसमें कई चीजों का संतुलन एक साथ साधना पड़ता है। सीट बंटवारा, वोट ट्रांसफर, नेतृत्व का सवाल, ऊपर-ऊपर समझौता के बजाय बूथ स्तर पर मजबूत तालमेल जरूरी है। व्यावहारिक तौर पर ये बड़ा कठिन व अव्यवहारिक साबित होता है।

ऋतुओं को निगल रहा प्रदूषण

बदलता मौसम,घटता जीवन

डॉ. विजय गर्ग

भारत में सदियों से छह ऋतुओं- बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर का अपना एक क्रम रहा है। हर ऋतु अपने विशिष्ट सौंदर्य, मौसम और जीवनशैली के साथ आती थी। आज, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण यह प्राकृतिक क्रम टूट रहा है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे प्रदूषण रूपी दानव हमारी प्यारी ऋतुओं को धीरे-धीरे निगलने लगा है।

ऋतुओं के परिवर्तन का बिगड़ता स्वरूप

अब उत्तर भारत में, विशेषकर, छह की बजाय केवल तीन मुख्य मौसम ही अनुभव किए जाते हैं: सर्दी, गर्मी और बरसात। और वे भी अपने निश्चित समय पर नहीं आते।

विलुप्त होती हेमंत व शिशिर (शीत): पहले अक्टूबर के अंत तक हल्की ठंड महसूस होने लगती थी (हेमंत), जो दिसंबर-जनवरी में भीषण शीत (शिशिर) में बदल जाती थी। अब, वैश्विक गर्मी (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण मानसून का विस्तार होता जा रहा है। अक्टूबर-नवंबर तक भी मानसूनी बारिश होती रहती है, और अचानक से तापमान गिर जाता है, जिससे हेमंत ऋतु का सुखद एहसास लगभग समाप्त हो गया है। ठंड का समय भी कम हो गया है।

गायब होती बसंत बयार: बसंत ऋतु (मार्च-अप्रैल) को सुहावना मौसम माना जाता था। लेकिन अब बीते कुछ वर्षों से, मार्च-अप्रैल से ही हीट वेव (अत्यधिक गर्मी) शुरू हो जाती है। परिणाम स्वरूप, बसंत की बयार महसूस नहीं होती व सीधे गर्मी का ताप झेलना पड़ता है।

अनियमित वर्षा: प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन से मानसून का पैटर्न भी बदल गया है। कहीं अत्यधिक बारिश से बाढ़ आ रही है, तो कहीं कम बारिश से सूखा पड़ रहा है, जिससे कृषि कैलेंडर पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया है।

प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग का सीधा असर

इस बदलाव का मुख्य कारण मानवजनित प्रदूषण और उससे उपजा ग्लोबल वार्मिंग है।

वायु प्रदूषण (स्मॉग): सर्दियों में शहरों पर छाने वाली जहरीली धुंध (स्मॉग) सूर्य के प्रकाश को धरती तक पहुंचने से रोकती है। इससे रात का तापमान तो कम होता है, दिन में ठंड का वह प्राकृतिक एहसास नहीं हो पाता, जिससे शीत ऋतु का आनंद बाधित होता है।

ग्रीनहाउस गैसें: जीवाश्म ईंधन जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का स्तर खतरनाक दर से बढ़ा है। ये गैसें पृथ्वी के चारों ओर एक परत बनाकर गर्मी को बाहर जाने से रोकती हैं, जिससे औसत

वैश्विक तापमान बढ़ रहा है। यही बढ़ा हुआ तापमान ऋतुओं के समय और तीव्रता को बिगाड़ रहा है।

ओजोन रिक्तीकरणः वायु प्रदूषण समताप मंडल में ओजोन परत को भी नुकसान पहुंचाता है, जिससे पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा बढ़ता है व मौसमी संतुलन बिगड़ता है।

स्वास्थ्य और कृषि पर गंभीर परिणाम

ऋतुओं के इस विघटन का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ रहा है:

स्वास्थ्य संकटः अचानक बढ़ता-घटता तापमान, स्मॉग और दूषित पानी से श्वसन संबंधी बीमारियां (अस्थमा), एलर्जी, हृदय रोग और डेंगू, मलेरिया जैसे संक्रामक रोग बढ़ रहे हैं।

कृषि का नुकसानः अनियमित वर्षा और तापमान में वृद्धि से फसलों का चक्र टूट रहा है। धान, गेहूँ और कपास जैसी महत्वपूर्ण फसलें प्रभावित हो रही हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा पर खतरा मंडरा रहा है।

1. मौसम का गड़बड़ाता चक्र

प्रदूषण, विशेषकर वायु में बढ़ता पार्टिकुलेट मैटर और ग्रीनहाउस गैसें, तापमान को लगातार बढ़ा रही हैं। इसका सीधे-सीधे असर मौसम चक्र पर पड़ा है। गर्मी लंबी और तीखी होने लगी है, जबकि सर्दी छोटी और अनियमित। बरसात कभी अपेक्षा से अधिक, कभी अत्यंत कम और असमय होने लगी है। अब ऋतुएं कैलेंडर नहीं, बल्कि प्रदूषण के स्तर के अनुसार बदल रही हैं।

2. धुंध ने निगल ली सुबह और शाम

सर्दियों की धुंध, जो कभी सौंदर्य का प्रतीक मानी जाती थी, अब स्मॉग का रूप ले चुकी है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर भारत के अधिकांश शहरों में स्मॉग की मोटी चादर सूरज की रोशनी तक को छिपाने लगी है। ऐसे में शरद और हेमंत की महीन ठंड का आनंद गायब होने लगा है। लोगों को मौसम कम और प्रदूषण ज्यादा महसूस होने लगा है।

3. प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है

प्रदूषण के कारण तापमान में असामान्य बदलाव पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के जीवन चक्र को प्रभावित कर रहा है। फल-फूल अपने निर्धारित समय पर नहीं खिल रहे। परिंदे अपनी पारंपरिक प्रवास-यात्राएं बदलने लगे हैं। फसलों की बुआई और कटाई का समय भी अव्यवस्थित होता जा रहा है। यह असंतुलन आने वाली खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिक स्थिरता के लिए खतरा है।

4. ऋतु-संवेदनाओं का खो जाना

बचपन की यादों में बसंत के फूलों की महक, पीली सरसों का सौंदर्य, सावन की खुशबू, शरद की उजली धूप शायद हमेशा के लिए धुंधली पड़ने लगी है। आज की पीढ़ी मौसम का सुख नहीं, प्रदूषण का दंश अधिक महसूस कर रही है। ऋतुएं अब अनुभव नहीं, आंकड़ों और चेतावनियों का विषय बन गई हैं।

5. समाधान की दिशा

अगर हम अभी नहीं जागे तो आने वाले समय में 'ऋतु' केवल किताबों में ही रह जाएँगी। इसके लिए जरूरी है–

वायु प्रदूषण के स्रोतों पर सख्त नियंत्रण

पराली प्रबंधन के लिए तकनीकी समाधान और किसानों को सहयोग

वाहनों और उद्योगों के उत्सर्जन में कमी

बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण

जनता में पर्यावरणीय जागरूकता

समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है, क्योंकि प्रदूषण भी सामूहिक समस्या है। प्रदूषण ने हमारी जीवनझ्शैली ही नहीं, बल्कि प्रकृति के प्राणवायु रूपी मौसमचक्र को भी जकड़ लिया है। ऋतुओं का विलुप्त होना केवल पर्यावरण का नहीं, हमारी संस्कृति और अस्तित्व का भी संकट है। यदि हम अभी कदम नहीं उठाएंगे तो आने वाली पीढ़ियां बसंत, शरद और हेमंत को केवल कहानियों में ही पढ़ेंगी।

समाधानः एक सामूहिक प्रयास

यह संकट अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे भारत की हवा और पानी को विषाक्त कर चुका है। इस पर तत्काल कार्रवाई आवश्यक हैः

प्रदूषण नियंत्रणः व्यक्तिगत और सरकारी स्तर पर वायु, जल और भूमि प्रदूषण को कम करने के लिए सख्त उपाय अपनाना।

नवीकरणीय ऊर्जाः जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करके सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों को अपनाना।

वन संरक्षण और वृक्षारोपणः वनों की कटाई को रोकना और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करना, क्योंकि पेड़ वातावरण को शुद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रकृति का दिया हुआ यह अनमोल उपहार–हमारी ऋतुएं–हमें बचाना होगा।

अगर हमने अभी सजगता नहीं दिखाई, तो आने वाली पीढ़ियां केवल किताबों में ही बसंत की बयार और हेमंत की सुखद दस्तक के बारे में पढ़ पाएंगी।

(लेखक सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, मलोट पंजाब)

जांच-पड़ताल

आरुषि हेमराज केस अनसुलझा सच

एक मासूम हत्या से शुरू हुई राष्ट्रीय बहस
जांच एजेंसियों की उलझन और न्यायिक प्रक्रिया का द्वंद्व

भानुकर मिश्र

देश की सबसे चर्चित मर्डर मिस्ट्री। आरुषि-हेमराज हत्याकांड। एक दशक तक मामला सुर्खियों में रहा। नई-नई थ्योरी गढ़ी गई। पुलिस और जांच एजेंसियों ने सिर खपाया। मीडिया ने भी नये-नये एंगल तलाशे। पर, नतीजा वही ढाक के तीन पात। आज भी यह मर्डर मिस्त्री अनसुलझी है। एक सच यह है कि दो हत्याएं हुईं। दूसरा सच यह भी है कि कोई दोषी भी नहीं है। वर्ष 2008 में घटित आरुषि-हेमराज हत्याकांड आज भी भारतीय आपराधिक न्याय प्रणाली के लिए जटिल पहेली बना हुआ है। शुरूआती जांच से लेकर अदालतों के फैसलों तक, इस केस में कई ऐसे मोड़ आए जिन्होंने इसे 'मिस्ट्री केस' की श्रेणी में स्थापित कर दिया। 16मई की रात 14 वर्षीय आरुषि तलवार की हत्या हो जाती है। पुलिस इस हत्याकांड की तहकीकात शुरू करती है। शुरूआती शक घरेलू नौकर हेमराज पर जाता है। संभ्रांत तलवार दंपति के घर हुआ आरुषि हत्याकांड सुर्खियों में था, पुलिस जांच शुरू ही कर रही थी कि तभी दूसरी हत्या की खबर आ जाती है। नोएडा के जलवायु विहार स्थित जिस मकान में आरुषि का शव कमरे में पाया जाता है, अगले दिन मकान की छत पर घरेलू नौकर हेमराज का शव मिला। इस हत्या की शुरूआती जांच नोएडा पुलिस के जिम्मे रही,बाद में मामला सीबीआई के पास जा पहुंचा। जांच एजेंसियों की भूमिका इस केस में सबसे अधिक सवालों के घेरे में रही। पहले नोएडा पुलिस और फिर सीबीआई ने मामले की जांच की, लेकिन दोनों की थ्योरी में काफी अंतर रहा। सीबीआई की पहली टीम ने 'आउट साइडर थ्योरी' पर काम किया, दूसरी टीम ने 'क्लोज्ड रूम मर्डर'मानते हुए आरुषि के माता-पिता राजेश तलवार व नूपुर को आरोपी बनाया। इस दोहरे हत्याकांड में नवंबर 2013 में सीबीआई न्यायालय, गाज़ियाबाद ने परिस्थिति जन्य साक्ष्यों के आधार पर राजेश व नूपुर तलवार को दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इस फैसले को 2017 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पलट दिया और साक्ष्यों की कमी बताते हुए दोनों(राजेश-नूपुर तलवार) को बरी कर दिया। अदालत ने अपने फैसले में कहा, अभियोजन पक्ष आरोप साबित करने में असफल रहा और संदेह के आधार पर किसी को सजा नहीं दी जा सकती। बाद में सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की, लेकिन सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया ने 2018 में अपील स्वीकार करने से इंकार कर दिया, जिससे हाईकोर्ट का फैसला बरकरार रहा। इस प्रकार कानूनी रूप से तलवार दंपत्ति बरी हो गए,लेकिन केस में असली हत्यारे कौन थे-यह सवाल आज भी अनुत्तरित है।

सीबीआई की जांचः दो कहानियां, सच्चाई सिर्फ एक

मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए जांच सीबीआई को सौंपी गई। यहां भी स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी। सीबीआई की पहली टीम ने बाहरी व्यक्तियों की संलिप्तता की संभावना जताई, जबकि दूसरी टीम ने माता-पिता को ही आरोपी माना। नतीजा, कोर्ट में भरोसेमंद नैरेटिव नहीं बन पाया। कोई चश्मदीद गवाह नहीं। कोई स्पष्ट हत्या का हथियार बरामद नहीं हुआ और पूरा केस पूरी तरह परिस्थिति जन्य साक्ष्य पर टिका रहा।

साक्ष्य संकलन और संरक्षण में पुलिस फेल

पड़ताल में यह भी सामने आया कि नोएडा पुलिस ने जल्दबाजी में थ्योरी बदली और 'ऑनर किलिंग' जैसी थ्योरी सार्वजनिक कर दी गई। जबकि क्राइम सीन ठीक से सुरक्षित नहीं किया गया। क्राइम सीन पर पुलिस ने बड़ी गलती की। मकान को ठीक से सील नहीं किया गया। लोग आते-जाते रहे और सबूत खराब हो गए। अदालत में साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत करने लायक फिंगरप्रिंट, ब्लड पैटर्न जैसे अहम साक्ष्य नहीं मिल सके।

बदलती फॉरेंसिक तकनीक और 'कोल्ड केस'

आपराधिक घटनाओं के विश्लेषक मानते हैं कि यह केस 'कोल्ड केस' स्टडी का महत्वपूर्ण उदाहरण बन चुका है। आधुनिक फॉरेंसिक तकनीकों—जैसे डीएनए प्रोफाइलिंग के उन्नत संस्करण, डिजिटल क्राइम सीन रिकंस्ट्रक्शन और एआई आधारित विश्लेषण—के जरिए ऐसे मामलों को फिर से जांच के दायरे में लाया जा सकता है। हालांकि, कानूनी रूप से किसी मामले को दोबारा खोलना जटिल प्रक्रिया है, खासकर जब अदालत किसी मामले में अंतिम निर्णय दे चुकी है।

सिस्टम पर उठते सवाल और समाज पर असर

आरुषि-हेमराज केस ने न केवल पुलिस और जांच एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए, बल्कि यह भी दिखाया कि किस तरह मीडिया कवरेज जनमत को प्रभावित कर सकता है। यह मामला आज भी लॉ स्टूडेंट्स, फॉरेंसिक एक्सपर्ट्स और पुलिस ट्रेनिंग में केस स्टडी के रूप में पढ़ाया जाता है। करीब डेढ़ दशक बाद भी यह केस एक अहम सवाल छोड़ता है—क्या तकनीकी और प्रक्रियात्मक खामियों के कारण सच्चाई हमेशा के लिए दब गई, या फिर भविष्य में कोई नई कड़ी इस रहस्य से पर्दा उठा पाएगी?

मनगढ़ंत एंगल में संभावनाएं तलाशती रही मीडिया

इस केस में मीडिया की भूमिका जितनी प्रभावशाली रही, उतनी ही विवादास्पद भी। खबरों की होड़ में कई चैनलों और प्रकाशनों ने तथ्यों से अधिक कल्पनाओं को महत्व दिया। बिना पुष्टि के थ्योरी चलाई गई। जनमत प्रभावित हुआ और कोर्ट में केस की दिशा भी प्रभावित मानी गई। मीडिया नैरेटिव में निजी जीवन की परतों को सार्वजनिक मंच पर उधेड़ा गया, जिससे एक शोकाकुल परिवार को सामाजिक न्यायालय में कठघरे में खड़ा कर दिया गया। यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक है कि क्या मीडिया का दायित्व केवल सूचना देना है, या वह जनमत निर्माण की जिम्मेदारी भी उठाता है?

राघव चड्ढा एंड पार्टी का भाजपा में जाना राजनैतिक या निजी मजबूरी

काशी शर्मा

भारतीय संसदीय लोकतंत्र के पतन में एक अध्याय और जुड़ गया। राघव चड्ढा सहित सात राज्यसभा सांसद 'आप' का त्याग कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। चड्ढा के साथ सांसद अशोक मित्तल गए। दस दिन पहले ही मित्तल के शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों पर ईडी के छापे पड़े थे। ये छापे क्यों मारे गए, इसका खुलासा अब हो गया है। मित्तल, चड्ढा के गुट में शामिल होकर भाजपा में आएं, इसके लिए ईडी के हथियार का इस्तेमाल किया गया। मोदी-शाह एक तरफ पश्चिम बंगाल के चुनाव प्रचार में नैतिकता पर भाषण दे रहे हैं और दूसरी तरफ दिल्ली व पंजाब में विपक्षी दलों के सांसद तोड़ रहे हैं। मित्तल ने मनी लॉन्ड्रिंग की, भ्रष्ट तरीके से अपना विश्वविद्यालय चलाया इसलिए 'ईडी' उनके घर में घुसी। अब मित्तल भाजपा की 'वॉशिंग मशीन' में ही घुस गए हैं इसलिए सारे दाग धुल गए। राघव चड्ढा तो कल तक 'भाजपा मतलब गुंडों की पार्टी' होने का ढिंढोरा पीट रहे थे। भ्रष्ट और गुंडों की पार्टी ने देश का बेड़ा गर्क कर दिया है, ऐसा चड्ढा का कहना था। अब उन्हीं गुंडों की पार्टी में चड्ढा शामिल हो गए और भाजपा अध्यक्ष नबीन ने चड्ढा को पेड़ा खिलाया। यह भारतीय लोकतंत्र में निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। चड्ढा कहते हैं, 'उनके पास राज्यसभा में दो-तिहाई सांसदों का बल है। इसलिए वे राज्यसभा की 'आप' का भाजपा में विलय कर रहे हैं।' चड्ढा की यह भूमिका अवैध और असंवैधानिक है। 10वीं अनुसूची में स्पष्ट लिखा है कि किसी भी प्रकार की फूट, चाहे वह

राघव चड्ढा तो कल तक 'भाजपा मतलब गुंडों की पार्टी' होने का ढिंढोरा पीट रहे थे। भ्रष्ट और गुंडों की पार्टी ने देश का बेड़ा गर्क कर दिया है, ऐसा चड्ढा का कहना था। अब उन्हीं गुंडों की पार्टी में चड्ढा शामिल हो गए और भाजपा अध्यक्ष नबीन ने चड्ढा को पेड़ा खिलाया। यह भारतीय लोकतंत्र में निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। चड्ढा कहते हैं, 'उनके पास राज्यसभा में दो-तिहाई सांसदों का बल है। इसलिए वे राज्यसभा की 'आप' का भाजपा में विलय कर रहे हैं।'

संख्या दो-तिहाई ही क्यों न हो, उसे संविधान की मान्यता नहीं है इसलिए आम आदमी पार्टी के सात सांसदों की फूट असंवैधानिक ठहरती है। यह तो हुई संविधान की किताब की बात, लेकिन क्या मौजूदा मोदी-शाह की सरकार, उनका चुनाव आयोग, सुप्रीम कोर्ट, राज्यसभा के सभापति संविधान की इन धाराओं का सम्मान करते हैं? तो इसका उत्तर 'नहीं' ही देना पड़ेगा। शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस में फूट की सुनवाई चार साल से सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के सामने चल रही है। यहां भी तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ द्वारा अवैध दलबदल को स्वीकार करने के बावजूद, दसवीं अनुसूची के अनुसार फूटे हुए विधायकों पर कार्रवाई नहीं हुई। तारीख पर तारीख पड़ रही है और दल बदल की गंदगी करने वाले विधायक महाराष्ट्र में सत्ता का आनंद ले रहे हैं। लोकतंत्र के लिए यह चित्र भयावह है। भाजपा ने राज्यसभा में 'आप' के जो सांसद तोड़े हैं, वे हवा के बुलबुले हैं। व्यापारी, उद्योगपति जैसे ये लोग; इनका जनता से कोई संबंध नहीं है। राघव चड्ढा का मामला 'पेज थ्री' का है। वह उतने तक ही सीमित रहेगा। इन सबसे भाजपा पंजाब में विधानसभा चुनाव जीत जाएगी, यह भ्रम है। पंजाब के एक प्रमुख नेता और कांग्रेस के 2 बार मुख्यमंत्री रहे कैप्टन अमरिंदर सिंह व सुनील जाखड़ जैसे नेता भी भाजपा को विजय नहीं दिला सके, लेकिन भारतीय जनता पार्टी की राजनीतिक भूख भस्मासुर और बकासुर की है। उन्हें देश के सभी विपक्षी दलों को निगलना है इसके लिए वे ईडी, सीबीआई का उपयोग कर रहे हैं। संघर्ष करने की हिम्मत जिनमें है, वे इस बवंडर में टिकते हैं और जो डरपोक हैं वे भाग जाते हैं या शरण में चले जाते हैं।

महाराष्ट्र में मिंधे (शिंदे), अजीत पवार शरण में चले गए। दिल्ली में शराब घोटाले के नाम पर मुख्यमंत्री केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सांसद संजय सिंह को मोदी-शाह ने जेल भेज दिया। इसी आरोप पत्र में राघव चड्ढा का भी नाम था, लेकिन वे गिरफ्तारी से बचने के लिए पत्नी सहित लंदन भाग गए। लंदन से ही मोदी परिवार के साथ सौदा करके भारत लौटे और अब 'आप' से अलग हो गए। 'आप' के राघव चड्ढा व उनके साथ के 6 लोग भाजपा में गए तो उन शरणागतों के लिए विलाप क्यों करना? 'आप' के ये सभी भगोड़े विभिन्न भ्रष्टाचार के मामलों में आरोपी हैं।

ये कारनामे ईडी और अन्य जांच एजेंसियों ने कागजों पर दर्ज किए हैं इसलिए 'आप' के भ्रष्टाचार की एक धारा भाजपा की दूसरी भ्रष्ट धारा में शामिल हो गई, बस इतना ही कहना है। मिंधे, चड्ढा, मित्तल का कोई विशेष राजनीतिक चरित्र नहीं है। भाजपा तो इस मामले में चरित्रहीन बन गई है। वर्तमान राजनीति का कोई चरित्र नहीं है। यही भारत का चरित्र बन गया है। जब तक दाने डाले जा रहे हैं, तब तक ऐसे 'राघू' (तोते) उड़ते ही रहेंगे। उड़ने दो!

प्रयागराज महोत्सव 2026

लोकधुनों से काव्य-यज्ञ तक संस्कृति का विराट संगम

भोजपुरी नाईट में लोकधुनों का जादू, कलाकारों ने बांधा समा
'ठिठोली 2026'—कविता, व्यंग्य और विचारों का जीवंत महायज्ञ

संतोष तिवारी

प्रयागराज, जहां गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम भारतीय संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करता है, वहीं इस सांस्कृतिक विरासत को सजीव करने का प्रयास प्रयागराज महोत्सव 2026 के रूप में एक बार फिर देखने को मिला। 20 और 21 मार्च को आयोजित इस द्विदिवसीय महोत्सव ने लोकसंगीत, साहित्य और सामाजिक सरोकारों को एक मंच पर लाकर न केवल कला का उत्सव मनाया, बल्कि समाज के विविध आयामों को भी रेखांकित किया।

लोकधुनों की गूंज से सजी पहली शाम

आसरा फाउण्डेशन, प्रयागराज प्रस्तुत करता है
प्रयागराज महोत्सव T-26
कुटुम्ब इंफ्राप्रोजेक्ट प्रा. लि.

(सांस्कृतिक संध्या)

कुटुम्ब इंफ्राप्रोजेक्ट प्रा. लि.

21 मार्च की रात, महोत्सव का केंद्र बना 'ठिठोली 2026

महोत्सव का आगाज 20 मार्च, शुक्रवार की रात भोजपुरी नाईट के साथ हुआ, जिसने वातावरण को लोकसंगीत की मधुरता से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना से हुआ, जिसे लोक गायिका रागिनी चंद्रा ने अपनी सुमधुर आवाज में प्रस्तुत किया।

इसके बाद मंच पर एक के बाद एक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। चंदौली से आए नीरज पाण्डेय, गाजीपुर के चर्चित भोजपुरी गायक जितेंद्र तिवारी 'अमृत', प्रयागराज के रत्नेश दुबे, आशुतोष श्रीवास्तव, भूपेंद्र शुक्ला और मनोज गुप्ता ने अपनी गायकी से ऐसा समां बाँधा कि पूरा सभागार झूम उठा।

'निमिया के डाढ़ी मैया' और 'फगुआ में रंग रस बरसे' जैसी प्रस्तुतियों ने फागुनी रंगों को जीवंत कर दिया।

'कलयुग में सिद्ध हो देव हनुमान जी' और 'शिव डाले गुलाल' ने भक्ति और लोक का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया।

वहीं आशुतोष श्रीवास्तव की गजलनुमा प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को भावुक कर दिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति नीरज तिवारी तथा

प्रयागराज के महापौर गणेश केसरवानी की उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा को और बढ़ाया। इस अवसर पर सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाली विभूतियों को सम्मानित भी किया गया। ओम नारायण त्रिपाठी को 'आसरा प्रयागराज गौरव सम्मान-2026', श्रुति अक्षय गोलवरकर को 'आसरा विशिष्ट सेवा सम्मान (मानवाधिकार)' सहित कई सम्मान प्रदान किए गए।

'ठिठोली 2026': कविता का जीवंत महायज्ञ

दूसरे दिन, 21 मार्च की रात, महोत्सव का केंद्र बना 'ठिठोली 2026'—जनकवि कैलाश गौतम की स्मृति को समर्पित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन। श्री दुर्गा पूजा पार्क, प्रीतम नगर में आयोजित इस आयोजन ने साहित्य प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रचा।

- मुख्य अतिथि माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति श्री क्षितिज शैलेंद्र रहे साथ ही साथ कई विशिष्ट अतिथियों की भी मौजूदगी रही।
- मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र ने दीप जलाकर समारोह का शुभारंभ किया तथा उन्होंने जन कवि कैलाश गौतम की कविता की परंपरा को देश-समाज को राह दिखाने वाली एवं सजग करने वाली है

कविता, व्यंग्य और समकालीन चेतना

इस कवि सम्मेलन में देशभर से आए प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी रचनाओं से विविध रसों की प्रस्तुति दी

रचनाकारों की पंक्तियां

(जनकवि कैलाश गौतम स्मृति अखिल भारतीय कवि सम्मेलन ठिठोली 2026)

प्रेम पत्र -थ्रू कबूतर

मैंने सोचा-
जरा पुराने युग को वापिस लाया जाये
और इस बार प्रेम पत्र
थ्रू कबूतर भिजवाया जाये।
'मैंने कबूतर के पंजे में चिट्ठी अटकाई और उसे ये बात समझाई-' देखो भाई,
ये तो याद नही
ये कौन से प्यार की कौन सी चिट्ठी है
पर तू यहां से पांच गलियां छोड़ कर
छठी गली में जाना ,वहां
गुलाबी छत वाली गुलाबी सी लड़की है न नीलू
'उसकी मम्मी को ये चिट्ठी दे आना।'
'कबूतर बोला-'
हे आदिकालीन युग के देवदास
इस जमाने में भी चिट्ठियों से आस!
अब मैं
ऐसी फालतू उड़ान नहीं भरता हूँ
मैं खुद अपनी कबूतरी को
व्हाट्सएप करता हूँ।'

(अरुण जैमिनी - हरियाणा)

इतना सा क्या मिला है तुम तो फूल गए हो
झूले पे झूठी तारीफों के झूल गए हो
मत भूलो कि हवा में ही करतब हैं तुम्हारे
पैरों तले जमीं नहीं है भूल गए हो

डॉ. श्लेष गौतम

हमारा जिस्म बोलेगा हमारी जान बोलेगी
हमारे रूह की पाकीजगी की शान बोलेगी
वतन के वास्ते जब भी हमारा सर कलम होगा
लहू की आखिरी वो बूंद हिन्दुस्तान बोलेगी

(डॉ. श्लेष गौतम - संचालक)

***

राजस्थान से आए अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तथा इंडिया' लाफ्टर चैलेंज फेम कवि सुरेश अलबेला ने बहु तेरे विषयों पर अपनी हास्य व्यंग्य की चुटीली रचनाएं पढ़ीं जिसमें देश समाज आज की राजनीति और भी बहुत विषयों पर लोगों को बहुत हंसाया गुदगुदाया।

** *

रंगों में भीगकर यूँ उर फाग हो गया है।
शब्दों में प्रेम डूबा अनुराग हो गया है।
गंगा हुआ है स्वर मन यमुना सरस्वती सा,
अधरों ने गीत गाया जो प्रयाग हो गया है।
अधरों ने गीत गाया जो प्रयाग हो गया है।

डॉ. रुचि चतुर्वेदी (आगरा)

** *

विश्व कविता दिवस पर

कविता तपते हुये मरुथल में शीतलता का आभास है
कविता जलते हुये अधरों पर लिखी हुयी प्यास है
कविता फूल की पंखुड़ी पर तैरती ओस की बूंद जैसी है
कविता बन्धन में होकर भी मुक्ति की हितैषी है
कविता उड़ती तितली के पंखों पर बिखरा हुआ रंग है
कविता हृदय में में उठती हुयी महकी उमंग है
कविता का आकाश सारे आकाश से न्यारा है
कविता सिर्फ कविता है कविता भोर का तारा है

चेतन चर्चित (इंदौर)

***

कठिन होता है कर्मों से,
निपट निष्काम हो जाना
धनुष और धैर्य दोनो धारकर,
सुख धाम हो जाना
उसे तजना पड़ा जिसके लिए,
सागर भी लांघा हो
नही आसान है जग में,
प्रभु श्री राम हो जाना

- डॉ. आदित्य जैन, कोटा

***

माना कवि का धर्म नहीं है, सिंहासन के गीत लिखे
कवि धर्म है सदा सर्वदा, सत्ता के विपरीत लिखे
जब भी हो कोई मद में राजा, तो आगाह करेगी कविता
किन्तु जब हो समर भूमि में,तो उत्साह भरेगी कविता
यह भूषण की परंपरा है, कालिदास का कर्म यही
छत्रसाल सा शासक हो तो फिर कविता का धर्म यही

सुमित ओरछा (ओरक्षा)

***

अकेलेपन में जो खुश है मुरझाया नहीं करते
गजल में खुद को लिखते, दर्द भी जाया नहीं करते हैं

(प्रतिमा दीक्षित-कानपुर)

उपरोक्त के अतिरिक्त श्री प्रद्युम्ननाथ तिवारी 'करूणेश', श्री कुमार विकास,श्री अभिजीत मिश्रा आदि ने भी अपनी रचनाएं पढ़ीं।

बताकर संवाद की शुरूआत की।

- कैलाश गौतम जी की साहित्यिक परंपरा को प्रयागराज के साथ ही वैश्विक धरोहर बताते हुए कहा कि हमारा साहित्य समाज का आईना होता है और जब-जब चुनौतियां आई हैं देश काल में तो हमारा साहित्य एक रोशनी की तरह सबको मार्गदर्शन देता रहा है।
- ठिठोली समारोह को कविताओं व शब्दों का एक ऐसा महायज्ञ बताया जिसकी सकारात्मकता देश और समाज को सदैव मार्ग दर्शन देती रहेगी।
- हरियाणा के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि श्री अरूण जैमिनी जी को आसरा कैलाश गौरव गौरव सम्मान 2026 से सम्मानित किया गया जिसमें शाल श्रीफल अंग वस्त्र स्मृति चिन्ह एवं सम्मान पत्र तथा नकद राशि दी गई तथा आगरा की कवयित्री डॉ. रूचि चतुर्वेदी को रविंद्र नाथ तिवारी आसरा गीत-ऋषिका सम्मान प्रदान किया गया।
- रचनाकारों तथा अन्य विभूतियों का सम्मान माननीय मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों के द्वारा तथा आसरा फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रदीप तिवारी द्वारा किया गया।
- विशिष्ट अतिथियों में श्री प्रवीण पटेल सांसद फूलपुर, डॉ. सिद्धार्थनाथ सिंह पूर्व कैबिनेट मंत्री व विधायक शहर पश्चिमी, गणेश केशरवानी महापौर प्रयागराज, हर्षवर्धन बाजपेई विधायकशहर उत्तरी, पूजा पाल, विधायक चायल कौशांबी, रवींद्र कुमार, निदेशक पेंशन, लखनऊ, प्रो. रंजीत सिंह आदि रहे।

संयोजन और सहभागिताः आयोजन की ताकत

इस भव्य आयोजन के पीछे आसरा फाउंडेशन का सशक्त नेतृत्व रहा। अध्यक्ष प्रदीप तिवारी और सचिव मनीष घोष ने न केवल कलाकारों का सम्मान किया, बल्कि पूरे आयोजन को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित किया। कार्यक्रम का संचालन अंतरराष्ट्रीय कवि डॉ. श्लेष गौतम ने किया, जबकि स्वागत और धन्यवाद ज्ञापन में भी स्थानीय प्रतिभाओं की सक्रिय भूमिका रही।

संस्कृति का संगम, समाज का प्रतिबिंब

प्रयागराज महोत्सव 2026 ने यह सिद्ध कर दिया कि संस्कृति केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के विचार, संघर्ष और संवेदनाओं का दर्पण भी है। लोकगीतों की सादगी से लेकर कविताओं की गहराई तक, इस महोत्सव ने भारतीय सांस्कृतिक चेतना के विविध रंगों को एक मंच पर समेटा। यह आयोजन न केवल कलाकारों के लिए मंच बना, बल्कि समाज के लिए एक संदेश भी–कि परंपरा और आधुनिकता का संतुलन ही संस्कृति को जीवित रखता है।

How Reels Affect Learning

Aubaid Ahmad Akhoon

The rise of reels and short-form content is reshaping attention spans, study patterns, and classroom engagement. In today's digital age, students are learning in a world very different from that of previous generations. Between school assignments and extracurricular activities, many young people spend hours each day scrolling through short videos on platforms like Instagram Reels, YouTube Shorts, and similar apps. These clips, often just seconds long, deliver entertainment, trends, and information at lightning speed. While they may seem harmless, educators and parents are increasingly asking: How do these short videos affect students' ability to learn?

The answer is complex. Reels are not entirely negative, but their growing presence in students' daily lives is changing how they focus, process information, and engage with education.

Teachers across schools and colleges are noticing a shift in how students behave in classrooms. Many report that students are more restless and less willing to engage in long explanations. Some struggle to listen without checking their phones, even for short periods.

Earlier, distractions in class might have been limited to whispering with friends or daydreaming. Now, a device in a pocket offers constant digital stimulation. Even when students are not actively watching reels, the urge to check notifications can occupy their thoughts, reducing their ability to fully engage in lessons.

This change does not mean students are less intelligent or less

capable. Instead, it reflects how their brains are adapting to a fast-moving digital environment. However, traditional education still depends heavily on sustained attention, creating a growing mismatch between learning styles and learning environments.

Interestingly, reels have a mixed effect on creativity. On one hand, short videos encourage students to create content editing clips, adding music, storytelling in short formats, and learning digital skills. Many students become more confident in expressing themselves visually and creatively.

On the other hand, constant consumption leaves less time for boredom and boredom is often where creativity begins. When students fill every free moment with scrolling, they have fewer opportunities to daydream, reflect, or think deeply, which are important parts of the creative process.

Teachers across schools and colleges are noticing a shift in how students behave in classrooms. Many report that students are more restless and less willing to engage in long explanations. Some struggle to listen without checking their phones, even for short periods. Earlier, distractions in class might have been limited to whispering with friends or daydreaming. Now, a device in a pocket offers constant digital stimulation. Even when students are not actively watching reels, the urge to check notifications can occupy their thoughts, reducing their ability to fully engage in lessons.

True creativity often requires quiet time, patience, and sustained effort qualities that fast-paced digital habits can quietly reduce.

Short videos also influence how students communicate. Online content often relies on slang, abbreviations, and quick reactions. While this builds a sense of digital belonging, it may affect formal communication skills.

Teachers report that some students struggle with structured writing, formal vocabulary, and detailed explanations. When most daily communication happens through short captions and comments, writing long essays or detailed answers can feel unfamiliar.

This does not mean reels directly "damage" language skills, but excessive reliance on ultra-

short communication may limit practice in more formal and academic forms of expression.

Another area affected by short-form video culture is reading. Long-form reading whether textbooks, novels, or detailed articles builds vocabulary, imagination, and analytical thinking. It trains the brain to follow complex ideas and arguments.

Students who spend large amounts of time on short videos may find reading more tiring or less enjoyable. They may prefer summaries, bullet points, or quick explanations rather than full chapters. Over time, this can weaken comprehension skills and reduce the ability to engage with in-depth material, which is essential for higher education and competitive exams.

Short videos are designed for quick consumption. Bright visuals, fast editing, music, and constant variety make them highly engaging. Unlike textbooks, lectures, or long-form videos, reels demand very little sustained attention. A swipe instantly replaces one clip with another, creating a continuous stream of stimulation.

Over time, this habit can influence how students respond to slower-paced learning environments. Reading a chapter, solving math problems, or listening to a 40-minute lesson may begin to feel unusually difficult. Teachers are observing that students often struggle to stay focused for extended periods, frequently reaching for their phones even during study time.

One of the biggest concerns linked to short-form content is its potential effect on attention span. Learning often requires deep concentration — the ability to sit with a problem, analyze information, and think critically. Reels, however, train the brain to expect constant novelty and rapid rewards.

When students become used to high-speed content, traditional learning methods may feel less stimulating. As a result, they may lose focus more easily, switch between tasks frequently, and find it harder to complete assignments without distractions. This constant shifting of attention reduces the brain's ability to retain information effectively.

Short videos are not just enter-

taining; they are designed to keep users engaged. Each new clip brings something different humor, surprise, or emotion triggering the brain's reward system. This creates a loop where users feel compelled to keep scrolling.

Short videos often present information in simplified, entertaining ways. While this can make content accessible, it may also encourage surface-level understanding. Subjects like literature, science, and history require deeper engagement, analysis, and reflection skills that develop through sustained focus.

Teachers report that some students now prefer quick summaries over detailed explanations. Writing long answers, reading complex passages, and engaging in thoughtful discussions can feel more challenging. Over time, this may affect critical thinking and problem-solving abilities.

Another important concern is sleep. Because reels are short and endlessly available, students often scroll late into the night without realizing how much time has passed. Screen exposure and mental stimulation before bed can delay sleep and reduce sleep quality.

Lack of proper rest directly affects memory, concentration, and mood all essential for learning. Tired students may find it harder to pay attention in class and retain information.

Additionally, reels frequently portray idealized lifestyles and achievements. Constant exposure to such content can lead to unhealthy comparisons, affecting self-esteem and increasing anxiety. Emotional stress further reduces a student's ability to focus and learn effectively.

Despite these challenges, short videos are not entirely harmful. When used thoughtfully, they can support learning.

Many educators and content creators use short videos to explain concepts in creative ways. Visual demonstrations, quick science experiments, language tips, and educational facts can spark curiosity. For visual learners, short clips can make difficult ideas easier to grasp. Reels can also expose students to global issues, new career paths, and innovative technologies. In moderation, they can serve as both educational tools and sources of relaxation.

About the Author

Driven by a deep commitment to advancing innovation and excellence in education and professional growth, Dr. Aqib continues to leave a lasting mark through coaching, training, and written work. Their comprehensive approach to learning empowers individuals with the knowledge and skills needed to succeed in an ever-evolving world, while also nurturing a strong appreciation for the life-changing value of education. By encouraging others to pursue lifelong learning, Dr. Aqib serves as a source of inspiration for those striving to realize their full potential and make meaningful contributions to society.

(Columnist | Motivational Speaker Associate Editor.)

लाख टके का सवाल : चुनाव आते ही क्यों गायब हो जाते हैं जमीनी मुद्दे?

आवाम का ध्यान भटकाने की तेज होती सियासत

शिवा शंकर पाण्डेय

चुनाव आते ही राजनीति का चेहरा बदल जाता है। रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई जैसे बुनियादी मुद्दों की जगह छा जाते हैं भावनात्मक, सांप्रदायिक और पहचान से जुड़े सवाल। यह सिर्फ संयोग है या एक सोची-समझी रणनीति? समन्वय संपादक शिवाशंकर पाण्डेय की पड़ताल।

राजनीति में खासकर, चुनावों के समय मुद्दों का यह बदलाव नया नहीं है। इंदिरा गांधी युग में गरीबी हटाओ, वीपी सिंह युग में मंडल तो कांशीराम युग में 85-15 जैसे गढ़े गए मुद्दे तत्कालीन चुनाव में 'हिट' साबित हुए। इनमें राजनीतिक दलों ने चुनावी फायदा तो भरपूर उठाया पर वोटर चुनावी फायदे के लिए सिर्फ और सिर्फ 'उपयोगी-भर' साबित हुआ। हर चुनाव के साथ यह पैटर्न बार-बार दोहराया जाता है। चुनाव से पहले जनता जिन समस्याओं से जूझ रही होती है, वही समस्याएं चुनावी भाषणों व बहसों में कम दिखाई देती हैं।

इसके बजाय ऐसे मुद्दे उभरते हैं जो लोगों की भावनाओं को तुरंत प्रभावित करते हैं। पिछले 4 दशक से ज्यादातर चुनाव परिणाम अचानक 'प्रचंड -सुनामी' के रूप में आने लगे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह बदलाव एक रणनीति का हिस्सा होता है। असली मुद्दों पर बात करने से सरकार या विपक्ष दोनों को जवाबदेही का सामना करना पड़ता है। लेकिन जब चर्चा भावनात्मक विषयों पर चली जाती है, तो सवाल पूछने की गुंजाइश कम हो जाती है।

रोजगार और महंगाई: सबसे बड़े लेकिन सबसे कम चर्चा वाले मुद्दे

देश में बेरोजगारी और महंगाई ऐसे मुद्दे हैं, जो हर वर्ग को प्रभावित करते हैं। युवा नौकरी के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जबकि आम आदमी महंगाई से परेशान है। लेकिन, चुनावी मंचों पर इन मुद्दों की चर्चा सीमित रह जाती है। कई युवाओं का कहना है कि चुनाव के समय उनकी समस्याओं पर कोई ठोस बहस नहीं होती। रोजगार के वादे जरूर किए जाते हैं, लेकिन वे अक्सर सामान्य और अस्पष्ट होते हैं। महंगाई पर भी बयान दिए जाते हैं, थोड़ी बहुत गाहे बगाहे चर्चा भी होती है, लेकिन ठोस समाधान की बात कम ही हो पाती है।

धर्म-जाति सबसे आसान व असरदार मुद्दे

चुनाव के समय धर्म और जाति से जुड़े मुद्दे अचानक केंद्र में आ जाते हैं। यह ऐसे विषय हैं जो लोगों को तेजी से जोड़ने और विभाजित करते हैं। राजनीतिक जानते हैं कि इन मुद्दों के जरिए वोटरों को प्रभावित करना आसान होता है। जानकार लोगों का मानना है कि 'जब चुनावी बहस इन मुद्दों पर केंद्रित हो जाती है तो जनता असली समस्याओं से ध्यान हटाकर पहचान की राजनीति में उलझ जाती है। इससे राजनीतिक दलों को जवाबदेही से बचने का अच्छा-खासा मौका मिल जाता है।'

मीडिया की भूमिका : एजेंडा सेटिंग का खेल

चुनावी मुद्दे बदलने में मीडिया की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं होती। टीवी डिबेट्स, न्यूज हेडलाइंस और सोशल मीडिया ट्रेंड्स यह तय करते हैं कि जनता किस मुद्दे पर ज्यादा चर्चा करेगी। अक्सर देखा भी गया है कि मीडिया भी उन्हीं मुद्दों पर प्रमुखता देता है जो ज्यादा सनसनीखेज और भावनात्मक होते हैं। इससे जटिल और गंभीर मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया है। अक्सर यह ट्रेंडिंग टॉपिक्स ही चर्चा का केंद्र बन जाते हैं।

ग्राउंड रियलिटी बनाम चुनावी भाषण

इस बारे में अनुभव साझा करते हुए यश और हर्ष टिप्पणी करते हैं अगर जमीनी स्तर पर देखा जाए तो लोगों की प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। गांव में किसान सिंचाई और फसल के दाम की बात करते हैं, तो शहरों में लोग नौकरी, ट्रैफिक और महंगाई से परेशान दिखते हैं। बावजूद इन सबके नेताओं के चुनावी भाषणों में इन मुद्दों का जिक्र लगभग न के बराबर होता है। जिला कचहरी के अधिवक्ता नीरज कुमार साफ

शब्दों में कहते हैं कि यह अंतर इस बात को दिखाता है कि चुनावी राजनीति और आम लोगों की वास्तविक जरूरत के बीच एक बड़ा गैप है। गैप लोकतंत्र की गुणवत्ता पर भी सवाल खड़े करता है।

क्या सिर्फ पॉलिटीशियन ही जिम्मेदार?

लाख टके का सवाल यह भी उठता है कि क्या सिर्फ राजनीतिक दल ही इसके लिए जिम्मेदार हैं या जनता की भी इसमें कोई खास भूमिका है? कई बार देखा गया है कि अक्सर ज्यादातर लोग भी भावनात्मक मुद्दों पर ही जल्दी प्रतिक्रिया देते हैं। प्राध्यापक अवध मिश्र और भाजपा के वरिष्ठ नेता विनोद ओझा कहते हैं कि जब तक जनता खुद असली मुद्दों पर सवाल नहीं पूछेगी तब तक यह पैटर्न बदलना, फिलहाल मुश्किल दिख रहा है। अमूमन वोटरों की जागरूकता और प्राथमिकताएं ही तय करती हैं कि चुनाव किस दिशा में जाएगा।

आखिर इस जटिल और गंभीर समस्या का समाधान क्या है?

इस जटिल समस्या के समाधान के लिए जागरूक मतदाता को आगे आकर आम जनमानस से जुड़े बुनियादी मुद्दे को प्राथमिकता देनी होगी। चुनाव टाइम पर नेताओं से निःसंकोच ठोस सवाल पूछने होंगे, और मीडिया को भी इन गंभीर मुद्दों को लेकर उतनी ही प्राथमिकता देनी होगी। जरूरत इस बात की है कि थ्री -पी यानि पब्लिक, प्रेस और पॉलिटिकल पार्टीज (जनता, मीडिया और राजनीतिक दल) तीनों मिलकर इस प्रवृत्ति को बदलें, क्योंकि जब तक चुनाव असली मुद्दों पर नहीं लड़े जाएंगे, तब तक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत नहीं हो सकतीं। ⓘ

राज्यनामा

दिल्ली

वंदे मातरम गीत को राष्ट्रगान जैसा दर्जा

केंद्र सरकार ने वंदे मातरम को राष्ट्रगान के समान दर्जा देने का फैसला लिया है। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की पहली बैठक में इस आशय का महत्वपूर्ण फैसला लिया गया है। इस बैठक में राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम में संशोधन के प्रस्ताव को भी मंजूरी मिल गई है। कैबिनेट में हुए फैसले के अनुसार बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम पर अब वही नियम और पाबंदियां लागू होंगी जो वर्तमान में राष्ट्रगान पर लागू है। इसके अपमान या बाधा डालने की स्थिति में सजा होगी।अभी तक राष्ट्रीय ध्वज, संविधान और राष्ट्रगान के अपमान पर जेल, जुर्माना या दोनों का प्रावधान था। अब वंदे मातरम भी इसमें शामिल किया जाएगा। वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर सरकार यह बदलाव ला रही है।

काशी शर्मा, दिल्ली

पश्चिम बंगाल

4 मई वाकई दीदी चली गई

हालिया हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम में पश्चिम बंगाल का नतीजा सबसे ज्यादा चौंकाने वाला साबित हुआ। ममता बनर्जी के पंद्रह साल की सत्ता पर भाजपा काबिज हो गई। पश्चिम बंगाल की जीत केवल एक राज्य की जीत नहीं, बल्कि इसे पूर्वी भारत में एक बड़ी राष्ट्रीय विचारधारा के विस्तार और मजबूती के रूप में देखा जा रहा है। पश्चिम बंगाल के वोटरों ने इस बार भ्रष्टाचार, हिंसा और प्रशासनिक जड़ता के खिलाफ विकास और नई कार्य संस्कृति को तवज्जो दी है। तृणमूल कांग्रेस के लिए यह चुनाव एक तगड़ा झटका भी है। तृणमूल कांग्रेस की पकड़ न सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर हुई बल्कि शहरी मध्यम वर्ग में भी इस बार परिवर्तन के पक्ष में जोरदार वोटिंग हुई। इसका परिणाम भी सामने आया। वैसे चुनाव के समय '4 मई दीदी गई ' वाला यह नारा बड़ा प्रासंगिक साबित हुआ। आखिरकार ममता दीदी समेत उनकी पूरी पार्टी ही साफ हो गई।

मानवेंद्र शर्मा, पश्चिम बंगाल

उत्तर प्रदेश

वो सुबह आखिर कब आएगी?

यूपी में मंत्रिमंडल विस्तार और भाजपा संगठन में बदलाव सियासी क्षेत्र में गंभीर मुद्दा बन गया है। कई बार ऐसा लगा कि बस अब बदलाव होने ही वाला है परंतु मंत्रिमंडल विस्तार और सांगठनिक परिवर्तन सियासी हलकों में अबूझ पहेली बना हुआ है। कई बार मामला टलता चला आ रहा है। बावजूद इन सबके भाजपा के राजनीतिक अंदरखाने से छनकर निकलने वाली 'कनफुसकी' को लेकर अटकलों का दौर जारी है। पश्चिमी यूपी से जाट और गुर्जर तो पूर्वांचल के दो ओबीसी चेहरों को सियासी ताकत मिलने की उम्मीद है। इसके अलावा संगठन में कई धुरंधर नेताओं के पर कतरे भी जा सकते हैं। दलित बिरादरी से भी दो नए चेहरे समेत सपा से बगावत करने वाली एक महिला नेता भी मंत्रिमंडल का हिस्सा बन सकती है। चर्चा तो यहां तक है कि कई पुराने मंत्रियों का इस बार वजन हल्का किया जा सकता है। ब्राह्मण बिरादरी को भी मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है।

भानुकर मिश्र, उत्तर प्रदेश

आवश्यकता है

विचार सेतु

द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका के लिए राज्य, मंडल, जिला स्तर पर संवाददाता, ब्यूरो प्रमुख एवं प्रतिनिधि की तथा विज्ञापन एवं मार्केटिंग के लिए भी कर्मठ युवक युवतियों की आवश्यकता है। संपर्क करें :

9415189919, 9598163216, 7007044100

E-mail – vicharsetu2024@gmail.com
vicharsetumagzine@gmail.com

Website – www.vicharsetu.com

राज्यनामा

पंजाब

पंजाब में बदलाव, भरोसे और सियासी संतुलन की 'जंग'

पंजाब की राजनीति एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर खड़ी दिख रही है। आगामी विधानसभा चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का चुनाव नहीं होगा, बल्कि यह राज्य की आर्थिक दिशा, किसान राजनीति, युवाओं के भविष्य और क्षेत्रीय अस्मिता की नई व्याख्या भी तय करेगा। पिछले कुछ वर्षों में राज्य ने बेरोजगारी, नशा, कृषि संकट, कानून व्यवस्था और पलायन जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना किया है। ऐसे में जनता अब केवल नारों से आगे बढ़कर ठोस परिणाम चाहती है।

सत्तारूढ़ दल अपने कामकाज, भ्रष्टाचार विरोधी अभियान और प्रशासनिक सुधारों को चुनावी मुद्दा बना रहा है, जबकि विपक्ष सरकार की कथित विफलताओं, बिगड़ती वित्तीय स्थिति और अधूरे वादों को लेकर आक्रामक है। किसान आंदोलन के बाद पंजाब की राजनीति में किसानों और ग्रामीण वोटरों की भूमिका और अधिक प्रभावशाली हो गई है। लगभग सभी दल कृषि, एमएसपी, बिजली और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अपने घोषणापत्र का हिस्सा बना रहे हैं। दूसरी ओर, युवाओं में रोजगार, शिक्षा और विदेश पलायन सबसे बड़ा मुद्दा बनकर उभरा है। पंजाब का एक बड़ा वर्ग अब ऐसी राजनीति चाहता है जो भावनात्मक मुद्दों से आगे बढ़कर निवेश, उद्योग और तकनीकी विकास की बात करे। शहरी क्षेत्रों में व्यापार और उद्योग से जुड़े वर्ग भी स्थिर शासन और बेहतर कानून व्यवस्था की अपेक्षा कर रहे हैं। चुनाव बहुकोणीय मुकाबले का संकेत दे रहा है। पंजाब का चुनाव राज्य की नई राजनीतिक दिशा तय करने वाला जनादेश साबित हो सकता है।

विजय गर्ग, पंजाब

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश की सियासत में 'सुपर बॉस' बनने की होड़

मध्य प्रदेश की राजनीति में इन दिनों सबसे बड़ा सवाल यही बना हुआ है कि सत्ता और संगठन के बीच इन दिनों असली 'सुपर बॉस' कौन है। राज्य की राजधानी भोपाल के सियासी गलियारों में चर्चा है कि कुछ मंत्री अपने विभाग से ज्यादा 'दिल्ली-कनेक्शन' को मजबूत करने में इन दिनों पूरी शिद्दत से जुटे हुए हैं। भाजपा के अंदर कुछ युवा चेहरों को आगे लाने की कवायद में तेजी को देखते हुए इधर कई पुराने दिग्गजों की बेचैनी बढ़ गई है। मामला यहीं तक होता तब भी गनीमत थी, बड़ा मामला नौकरशाहों में बड़े स्तर पर फेरबदल किए जाने की अटकलों को लेकर भी है। इस तरह की अटकलों ने मंत्रालय के कई अफसरों की नींद उड़ा रखी है। उधर, मालवा और बुंदेलखंड के कई कद्दावर नेताओं के बीच क्षेत्रीय संतुलन को लेकर खींचतान की फुसफुसाहट लगातार सुनाई दे रही है। ऐसे में देखना है कि आगे क्या होगा?

सुमित ओरछा, मध्य प्रदेश

सोशल मीडिया अवसर, असर और आह्वान

संजय कुमार

डिजिटल क्रांति का सशक्त माध्यम: अभिव्यक्ति, सूचना और विकास

21वीं सदी के डिजिटल परिदृश्य में सोशल मीडिया ने संवाद की परिभाषा ही बदल दी है। इन दिनों फेसबुक, एक्स (पूर्व नाम ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि विचार-विनिमय, सूचना प्रसार और सामाजिक जागरूकता के प्रमुख मंच बन चुके हैं।

सोशल मीडिया ने आम नागरिक को अभिव्यक्ति की वह स्वतंत्रता दी है, जो पहले सीमित संसाधनों तक ही सिमटी थी। अब कोई भी व्यक्ति अपने विचार, अनुभव और मुद्दों को वैश्विक स्तर पर साझा कर सकता है। यही कारण है कि यह मंच लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है। नागरिक सीधे अपने जनप्रतिनिधियों तक अपनी बात पहुंचा रहे हैं, जिससे शासन व्यवस्था में

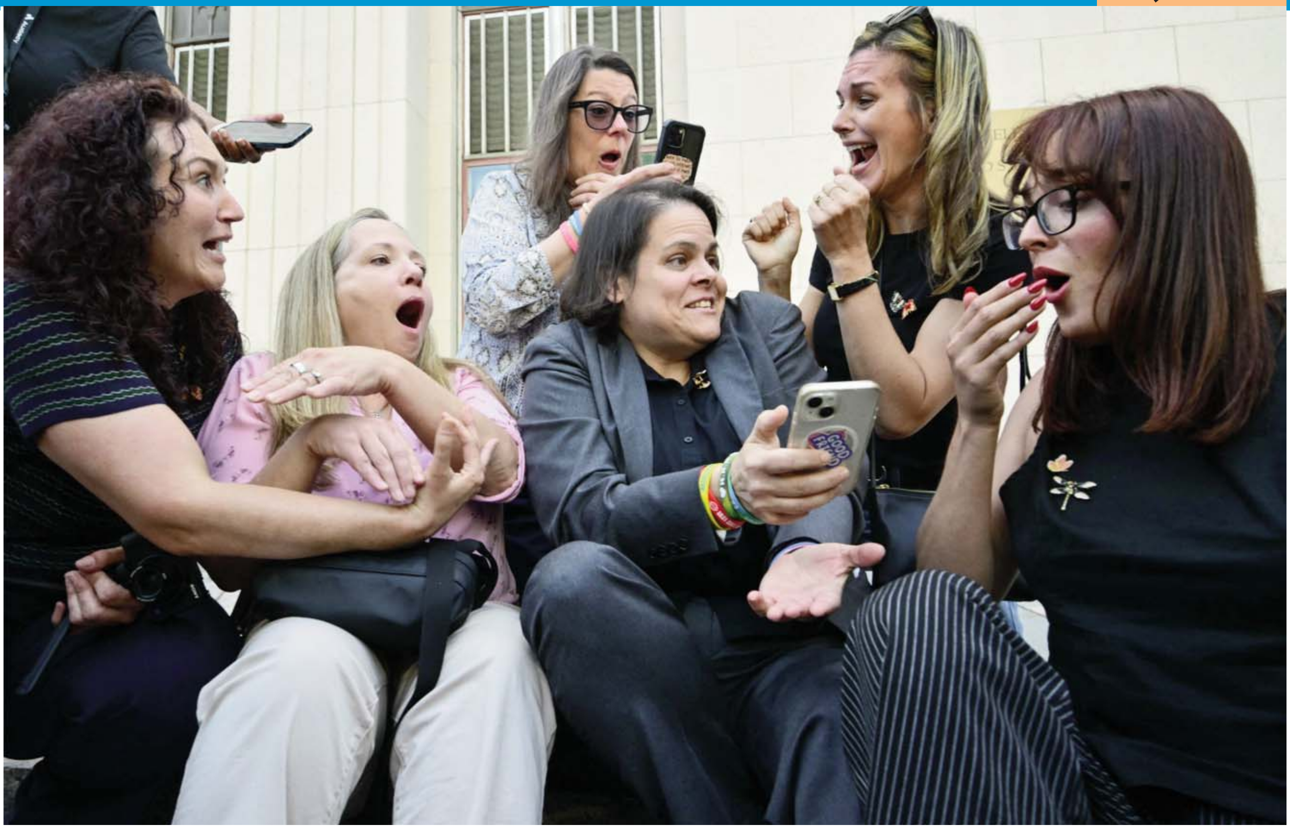

पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ी है।

इसके साथ ही सूचना का तीव्र और व्यापक प्रसार सोशल मीडिया की सबसे बड़ी ताकत है। आपदा या संकट के समय यह जीवनरक्षक माध्यम के रूप में सामने आता है। कोविड-19 महामारी के दौरान आवश्यक संसाधनों की जानकारी साझा करने में इसकी भूमिका उल्लेखनीय रही।

आर्थिक दृष्टि से भी सोशल मीडिया ने नए आयाम खोले हैं। डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट क्रिएशन और इन्फ्लुएंसर संस्कृति ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं। छोटे व्यापारी और स्टार्टअप अब वैश्विक बाजार तक अपनी पहुंच बना रहे हैं।

सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया ने अपनी प्रभावशीलता सिद्ध की है। विभिन्न जनआंदोलनों और अभियानों के माध्यम से समाज में जागरूकता और परिवर्तन की लहर पैदा हुई है।

चुनौतियां और चिंताएंः फेक न्यूज, मानसिक दबाव और सामाजिक विघटन

जहां सोशल मीडिया के अनेक सकारात्मक पहलू हैं, वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी उतने ही गंभीर हैं। सबसे बड़ी समस्या है, फेक न्यूज और अफवाहों का तेजी से प्रसार। बिना सत्यापन के साझा की गई जानकारी समाज में भ्रम, भय और कई बार हिंसा का कारण बन जा रही है।

मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव भी चिंता का विषय है। लगातार स्क्रीन पर समय बिताना, लाइक्स और फॉलोवर्स की प्रतिस्पर्धा तथा दूसरों से तुलना की प्रवृत्ति युवाओं में तनाव, अवसाद और आत्म-सम्मान में कमी ला रही है।

निजता का हनन भी एक गंभीर चुनौती बन चुका है। सोशल मीडिया पर साझा की गई व्यक्तिगत जानकारी साइबर अपराधों का कारण बन रही है। डेटा चोरी और ऑनलाइन ठगी के मामले बढ़ते जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, समय की बबादी और सामाजिक संबंधों में दूरी भी इसके दुष्परिणाम हैं। लोग वास्तविक जीवन की अपेक्षा वर्चुअल दुनिया में अधिक समय बिताने लगे हैं, जिससे रिश्तों में संवाद और संवेदनशीलता कम हो रही है। साइबर बुलिंग और ट्रोलिंग जैसी समस्याएं भी तेजी से बढ़ रही हैं, जो विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं के लिए मानसिक उत्पीड़न का कारण बनती हैं।

संतुलन की आवश्यकताः जिम्मेदार उपयोग और जागरूक समाज की ओर

सोशल मीडिया न तो पूर्णतः वरदान है और न ही पूर्णतः अभिशाप। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसका प्रभाव उसके उपयोग पर निर्भर करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें, ताकि लोग सही और गलत जानकारी में अंतर कर सकें। साथ ही, प्रत्येक उपयोगकर्ता को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए। सरकार और संबंधित संस्थाओं को भी फेक न्यूज और साइबर अपराधों पर नियंत्रण के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्वयं समाज की है, जहां हर व्यक्ति जागरूक और संयमित उपयोग का उदाहरण प्रस्तुत करे। अंततः, सोशल मीडिया का संतुलित और सकारात्मक उपयोग ही उसे समाज के विकास का सशक्त उपकरण बना सकता है। यह हमारे हाथ में है कि हम इसे प्रगति का माध्यम बनाएं या समस्या का कारण।

200 साल के हिंदी पत्रकारिता से सबक

विकसित भारत का मंत्र है- 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत'

प्रो.संजय द्विवेदी

हिंदी पत्रकारिता के 200 साल का जश्न मनाते हुए हमें यह विचार भी करना चाहिए कि आखिर हम कहां आ गए हैं। 30 मई,1826 को पं.युगुलकिशोर शुक्ल ने 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' का मंत्रघोष करते हुए अपना जब अपना पत्र 'उदंत मार्तण्ड' निकाला था तो दिन चुना था नारद जयंती का। लेकिन अपने गहरे मूल्यबोध, भाषा प्रेम के बावजूद वे उसे चला नहीं पाए। यह पहले अखबार की त्रासदी थी, किंतु वह शुरूआत थी। जिसने हिंदी को आत्मविश्वास दिया कि इस भाषा में भी अखबार निकाले जा सकते हैं। इसके पहले अंग्रेजी, बंगाली, फारसी के अखबार तो कोलकाता से निकल ही रहे थे। इन सबके बीच हिंदी ने भी अपनी जगह बनाई। इसलिए 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन के बाद की 200 सालों की यात्रा हिंदी पत्रकारिता के आत्मविश्वास, मूल्यचेतना और देश का प्रखर स्वर बन जाने की यात्रा भी है।

आज हिंदी और भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता देश का मुख्य स्वर है। अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुए देश ने अपनी भारतीय भाषाओं में लिखना, बोलना,पढ़ना और सुनना प्रारंभ किया। हिंदी और भारतीय भाषाओं का मीडिया अपनी लोकप्रियता में अग्रणी है। अंग्रेजी मीडिया की इससे कोई तुलना नहीं हो सकती। प्रभाव, गुणवत्ता और पहुंच सभी मामलों में आज भारतीय भाषाओं का मीडिया इस देश की आकांक्षाओं, सपनों,संघर्ष, जनांदोलनों और आर्तनाद को आवाज देने वाला मीडिया बन चुका है। देश के जनसामान्य के सपनों और उम्मीदों का अक्स भारतीय भाषाओं की मीडिया में दिखता है। गांव-गांव

तक पहुंचे अखबारों ने एक अलग प्रकार का सशक्तीकरण किया है। रेडियो ने राहत दी है तो टीवी उन्हें देश के चेहरे दिखाता है। अब डिजीटल माध्यमों से लोकभाषाएं भी प्रवास कर रही हैं। दुनिया भर में हमारी भाषाएं ही नहीं, बोलियां भी सुनी, देखी जा रही हैं। 'यू-ट्यूब' ने भारत के 'स्व' को वैश्विक आधार दिया है। अपनी संस्कृति से, भाषा से, प्रदर्शन कलाओं से, खानपान, रीति-रिवाज से जुड़े रहना अब आसान है। यू-ट्यूब पर अनेक लोग आपको इन विधाओं से जोड़ते हैं, भले ही आप दुनिया के वृत्त में कहीं भी बसे हों।

लोकप्रियता और सार्थकता के द्वंद-

आज बहस यहां आकर टिक गयी है कि लोकप्रियता और सार्थकता में किसे चुना जाए। प्रिंट मीडिया में तो बहुत कुछ आज भी संभला हुआ है किंतु डिजिटल माध्यमों में लोकप्रिय होने और लाइक्स की होड़ के कारण बहुत कुछ गड़बड़ भी हो रहा है। कंटेट की शुचिता सवालों के घेरे में है। फेक न्यूज, हेट न्यूज, अश्लीलता का बाजार सब कुछ यहां है। ठग, सलाहकार, मनोविकारी, अपराधी व पाखंडी भी यहां अपना व्यापार चला रहे हैं। लोगों को धोखा दे रहे हैं। कंटेट के इस बाजार में सब कुछ 'अमृत' नहीं है, 'जहर' भी है और मनोविकार भी। इसलिए मीडिया की व्यापकता ने परंपरागत मीडिया प्रतिष्ठानों को हैरत में डाल दिया है। अनेक कथित विचार नायक उभरकर आए हैं। यू-ट्यूबर नाम की नई प्रजाति भी दिखती है। उसमें बहुत अच्छा काम कर रहे हैं तो बड़ी मात्रा में मनोविकारों के प्रचारकर्ता भी हैं। इस कठिन समय में मीडिया के पारंपरिक अधिष्ठान पर कार्य करने वालों के सामने खुद को प्रासंगिक बनाए रखने की बड़ी चुनौती है। नए माध्यमों पर अवतरित योद्धा कुछ भी कह रहे हैं और देश उन्हें सुन रहा है। ऐसे में किया क्या जाए।

पठनीयता का संकट व डिजिटल का जश्न

पत्रकारिता के 200 साल का जश्न मनाते समय हमें सबसे बड़ी चिंता प्रिंट माध्यमों की पठनीयता की है। अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं, किताबों की पठनीयता गहरे संकट में है। मोबाइल माध्यमों पर जाते युवा अब शायद ही अखबार पढ़ते हों। जहां अखबार जा रहे हैं वहां भी वे पलटे भी जा रहे हों, तो बड़ी बात है।

इसका आभास आपको गायब होते बुक स्टालों से होगा। पहले बुक स्टाल पत्र-पत्रिकाओं से गुलजार रहा करते थे। आज उनकी संख्या कम दिखती है। एचए व्हीलर, सर्वोदय के बुक स्टाल रेलवे स्टेशनों पर आकर्षण का केंद्र थे, आज उन स्टालों पर किताबें कम खाद्य सामग्री ज्यादा बिक रही है। एयरपोर्ट्स पर कुछ सजीले बुक स्टाल्स दिखेंगें जहां से हिंदी और भारतीय भाषाओं का साहित्य नदारद दिखेगा। पत्र-पत्रिकाओं की तो जाने दीजिए।

कायम है छपे हुए शब्दों पर भरोसा-

देश की बड़ी आबादी का भरोसा छपे हुए शब्दों पर आज भी कायम है। यह भरोसा ही इस देश के प्रिंट मीडिया की शक्ति है। इससे ही प्रिंट मीडिया अपने को बनाए और बचाए हुए है। इसके साथ ही उनके ई-पेपर और पोर्टल पर जा रहे युवा और अन्य पाठक बताते हैं कि बदलते माध्यमों के साथ भी वे अपने अखबार या मैगजीन से जुड़े हुए हैं। इसका एक लाभ यह भी है कि हमारी पत्र-पत्रिकाओं का भूगोल अब वैश्विक है। एक अखबार को छापकर आप कहां तक पहुंचा सकते हैं, किंतु उसके ई-पेपर को पूरी दुनिया में देखा जा सकता है। यह विस्तार भी नए तरीके से माध्यमों को लाभ पहुंचा रहा है।

पहले मुफ्त में आनलाईन पढ़ने की सुविधा से अलग अब कुछ मीडिया समूह पाठकों से धन अर्जित करने लगे हैं। वह आनलाइन मेंबरशिप के तौर भी है। गूगल के विज्ञापनों से भी। केंद्र और राज्य सरकारें भी अब लाइनलाईन मीडिया को विज्ञापन देने लगी हैं। यह एक नया बदलाव है, जिसे समझा जाना चाहिए। हमें यह समझना होगा कि मोबाइल अब सामग्री ग्रहण करने का मुख्य पटल बन गया है। ऐसे में अपने माध्यमों को न सिर्फ मोबाइल के लायक बनना होगा बल्कि यहां उपलब्ध भी होना होगा। ऐसा करके अनेक मीडिया प्रतिष्ठानों ने खासी पाठक और दर्शक संख्या पाई है, जो उनके प्रिंट संस्करण कभी नहीं पा सकते थे।

नहीं पढ़ सकते, सुनिए जनाब-

नए समय में मीडिया ने तकनीक की सवारी कर ली है। इसके कई लाभ भी हैं। किसी भी मीडिया को अब किसी भी भाषा में पढ़ने की सुविधा इसके विस्तार का बड़ा कारण बन रही है। टेक्ट्स का संकट भी खत्म होता दिख रहा है, जब आप लिपि न आने के कारण कुछ पढ़ न सकें तो उसे सुन सकते हैं। इसी के चलते किताबों को, अखबारों मे छपी खबरों को सुना जा रहा है। बहुत समय तक अपने माध्यमों पर रोमन में खबरें पढ़ते थे, आज देवनागरी लिपि न आने के बाद भी अगर भाषा की समझ है तो हिंदी को सुनकर समझ सकते हैं। यह एक तरह की क्रांति ही है। नित नई सुविधाएं शायद लिपि, भाषा की सीमाएं तोड़कर एक नई दुनिया रचें। जिसमें आप अपनी सामग्री अपनी भाषा में सुन सकते हैं। निरंतर विकसित होते एआई टूल्स इसे संभव करने में लगे हैं।

क्या हों हमारे संकल्प-

इस पूरे परिदृश्य में हमें तकनीक ने बहुत सी सुविधाएं दी हैं। अब जरूरत इस बात की है कि हम अपनी भाषाओं को श्रेष्ठ ज्ञान, सूचनाओं का केंद्र बनाएं। अब बाजार में वही टिकेगा जिसके पास श्रेष्ठ होगा। जाहिर है हमें अपने माध्यमों को कंटेंट की दृष्टि से सबल और सार्थक बनाना होगा। हमारे पास दुनिया को देने के लिए भारत का विचार है। शांति, सद्भाव का विचार है। संवाद से संकटों का हल करने का लंबा अभ्यास है। भारतीय पत्रकारिता आज वैश्विक मंच पर भी स्थान बना चुकी है। वह दुनिया की खास आवाज है। इसे जनसरोकारों से आगे जाकर लोकमंगल और विश्वमंगल के लक्ष्य से भी जुड़ना होगा। सिर्फ समस्याओं को उठाने वाली पत्रकारिता से आगे समाधान को भी प्रस्तुत करने वाला मीडिया अभी प्रतीक्षित है। 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' का हिंदी के प्रथम संपादक का संकल्प हमारा भी संकल्प बने। यह संकल्प ही विकसित भारत का ध्येयमंत्र बन सकता है। भारतीय पत्रकारिता अपने उजले अतीत से प्रेरणा लेकर नया भारत बनाने के मिशन को पूरा करेगी इसमें संशय नहीं है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष हैं।)

कानपुर...हिंदी पत्रकारिता के 200 साल और पहला संपादक

दावा उन्नाव के बैसवारा क्षेत्र के मूल निवासी थे युगल किशोर शुक्ल के पूर्वज

युवावस्था में चले गए थे कोलकाता और नौकरी के बाद ले गए परिवार, वापसी का नहीं है उल्लेख

बैसवारा क्षेत्र के भाटनखेड़ा गांव में रहने वाली उनकी वर्तमान पीढ़ी का दावा वंशावली में उनका जिक्र

शिवा अवस्थी

हिंदी पत्रकारिता के जनक और पहले समाचार पत्र उदंत मार्तंड (उदंत मार्त्तण्ड) के संपादक युगल किशोर शुक्ल (जुगुल किशोर सुकुल) की याद हर सजग हिंदी प्रहरी के दिल-दिमाग में अब भी ताजा है। वह कानपुर में जिस क्षेत्र में रहते थे, वहां अब कारोबारी दुनिया आबाद हो चुकी है। 200 से अधिक साल बीतने के कारण सब कुछ बदल चुका है। चहुंओर अट्टालिकाओं से क्षेत्र घिर गया है। बड़े-बड़े मकानों, शोरूमों में क्षेत्र तब्दील हो चुका है। इसलिए कोई निश्चित तौर पर उनके घर का पता नहीं बता पा रहा है। हालांकि, उनके पूर्वजों के उन्नाव के बैसवारा क्षेत्र के मूल निवासी होने की बात कई जगहों पर मिलती है। इससे लोग उनके उन्नाव के होने का दावा करते हैं। वो कानपुर में रहे और युवावस्था में ही काम की तलाश में कोलकाता चले गए थे, ऐसा भी कई जगहों पर उल्लेख मिलता है, लेकिन इसके बाद कानपुर वापसी का कोई प्रमाण नहीं है। माना जाता कि तब व्यापारिक क्षेत्र कोलकाता होने के कारण वहां बहुतायत में दूसरे क्षेत्रों के लोग रहने पहुंचते थे। इसीलिए शुक्ल भी वहां गए होंगे।

हिंदी के विद्वान व इतिहासकार उनके कानपुर में पैदा होने की बात कहते हैं तो उन्नाव के बैसवारा क्षेत्र स्थित भाटनखेड़ा गांव में उनकी वर्तमान पीढ़ी के शरदचंद्र शुक्ला उन्हें अपना पूर्वज बताते हुए बंशावली में उनका नाम तक होने का दावा भी करते हैं। उनके 84 साल के भाई कृष्ण कुमार शुक्ला ने बताया कि उनके पूर्वजों में भैरों प्रसाद शुक्ल के चार बेटों जुगुल किशोर, राज किशोर, दीप नारायण व देव नारायण का जिक्र बंशावली में मिलता है। शादी समारोहों के दौरान इन्हें निमंत्रण देते समय उनका नाम भी लिया जाता है। पुराने समय से लेकर वर्तमान तक शादी-विवाह समारोह में पूर्वजों को निमंत्रित किया जाता है। इसमें तुमहूं निवाते कहते हुए उन्हें कार्यक्रम में आमंत्रित करने की प्रथा है। कानपुर में जुगुल किशोर का घर पटकापुर निवासी व आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के बीमार होने पर सरस्वती पत्रिका का संपादन करने वाले पंडित उदय नारायण बाजपेयी के पूर्वजों के आसपास बताया जाता है। उस समय यहां कई हिंदी के विद्वान रहते थे। कुछ लोग लाटूश रोड भी उनके घर का पता बताते हैं। तब यह क्षेत्र तत्कालीन बंगाल महा प्रांत के अंतर्गत गंगा तट के पास था। कानपुर में कई वर्ष तक रहने के बाद वह काम की तलाश में राजधानी क्षेत्र कोलकाता चले गए थे। अंग्रेजों की राजधानी तब कोलकाता में थी, जो वर्ष 1911 तक रही और बाद में दिल्ली हो गई थी। उन दिनों यहां के ज्यादातर लोग रोजगार की तलाश में कोलकाता ही जाते थे। वहां अदालत में प्रोसीडिंग रीडर (अदालती कार्यवाही लिपिबद्ध करने वाले) के रूप में जुगुल किशोर को नौकरी मिल गई। उसी समय वह अपना परिवार भी साथ में ले गए थे। उसके बाद कानपुर वापस आने का जिक्र नहीं मिलता है। लाटूश रोड, पटकापुर, कुरसवां तक अलग-अलग कस्बों के रूप में यह इलाका बसा था। कुछ लोग जाजमऊ में भी उनके रहने की बात भले कहते हैं पर ठीक से इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है। ये सभी क्षेत्र अब धीरे-धीरे व्यापारिक गढ़ बन गए हैं। घरों के अंदर, अंदरूनी गलियों से लेकर मुख्य सड़कों तक बड़े-बड़े गोदाम, शोरूम और कुटीर उद्योग संचालित हैं। तमाम पुराने लोग अपना घर बेचकर दूसरे क्षेत्रों में रहने लगे हैं।

20 वर्ष की उम्र में छोड़ दिया था कानपुर

इतिहास के जानकार बताते हैं कि जुगुल किशोर ने करीब 20 साल की उम्र में ही कानपुर छोड़ दिया था। ये बात उनके नौ फरवरी 1816 को उदंत मार्तंड अखबार के लाइसेंस के लिए तत्कालीन व्यवस्था के तहत मुख्य सचिव को लिखे गए पत्र से भी पता चलती है। कोलकाता में कुछ साल गुजारने के बाद ही उनके समाचार पत्र प्रकाशित करने का प्रयास शुरू करने की बात कही जाती है। इसमें इसका उल्लेख भी मिलता है।

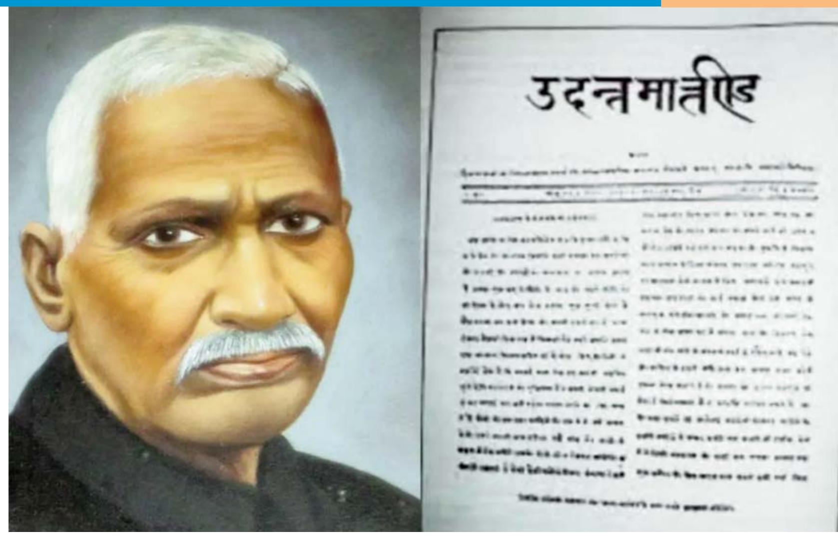
उदन्त मार्त्तण्ड

10 साल बाद मिली थी अखबार प्रकाशन की अनुमति, पत्र में लिखी थी ये भाषा

प्रयागराज के अलोपीबाग स्थित पंडित देवीदत्त शुक्ल-पंडित रामदत्त शुक्ल शोध संस्थान के संस्थापक व्रतशील शर्मा के मुताबिक, यहां के ख्यातिलब्ध पत्रकार स्वर्गीय शिव कुमार दुबे ने अपनी पुस्तक में जुगुल किशोर के पत्र का जिक्र किया है। पत्र की भाषा कुछ इस तरह थी-'हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में एक साप्ताहिक समाचार पत्र उदंत मार्तंड के प्रकाशन का आकांक्षी होकर मैं आपकी अनुमति से मजिस्ट्रेट के सम्मुख अपने और मन्नू ठाकुर द्वारा परिपुष्ट अपेक्षित शपथ पत्र प्रेषित करके उसके लिए सरकारी स्वीकृति का अनुरोध करता हूं।' इस पत्र के प्रकाशन के लिए उन्हें 10 साल बाद अनुमति मिल सकी थी।

कानपुर की खबरें हर अंक में छपती थीं

उदंत मार्तंड समाचार पत्र में कानपुर से जुड़ी रोचक खबरें हर अंक में छपती थीं। औद्योगिक गतिविधियों के समाचार लिखे गए थे, जिससे साफ है कि उनका कोई प्रतिनिधि भी कानपुर में नियुक्त था। वही कानपुर के समाचार वहां भेजता रहा होगा, क्योंकि औद्योगिक नगर और गंगा तट पर बसे कानपुर पर शुरू से ही अंग्रेजों की निगाह रही थी। उन्होंने यहां पर उत्तर छावनी भी बनाई थी। इसके लिए कानपुर नार्थ बैरक्स यानी सीएनबी रेलवे स्टेशन भी बनाया था, जहां के लिए प्रयागराज से मालगाड़ी पहली बार चली थी। वही सीएनबी अब भी कानपुर रेलवे स्टेशन के कोड के रूप में रेल टिकटों पर अंकित किया जाता है। कई खबरें तो तीन माह बाद तक भी छपती थीं। पांच सितंबर 1826 के अंक में विदेशी कपड़ा का आयात कंपनी सरकार के बराबर बढ़ाने और सूत आयात करने की छूट देने का समाचार छपा था। इसमें उदंत मार्तंड ने कई वर्षों के आंकड़े रखकर देश की होने वाली हानि की ओर ध्यान आकर्षित किया था। वर्ष 1815 से 1824 तक सूत आयात के आंकड़े प्रतिवर्ष के हिसाब से दिए गए थे। इसी तरह 12 दिसंबर,1826 के अंक में अवध के नवाब गाजीउद्दीन हैदर और लार्ड एमहर्स्ट की कानपुर मे हुई भेंट का समाचार छपा था। इसमें गंगा में नावों की पुल बंदी करके बादशाह के बड़े ठाट से गंगा पार होकर कानपुर पहुंचने का जिक्र है। उदंत मार्तंड की तब की भाषा में लिखा है कि '81 आदमियों ने एक मेज में बैठ के भोजन किया, भोजन हुए उपरांत बादशाह को बढ़िया कपडे और दुशाले ओ भांति भांति के आभरण ओ रत्न करके खचित ओ जटित एक्यावन थार आगे धरा ओ उनके पोते को बीस थार ओ सब भाइयो को बीस-बीस थार के लेखे दिया गया, फिर लार्ड साहिब उठ के बादशाह की ऊंगली में बड़े मोल की अंगूठी पहिना दी और सब मुसाहिबो को भी यथायोग पारितोषिक दिया, फिर अतर ओ पान के सम्मान हुए पर बादशाह अपनी छावनी को लौट आए।

1850 में निकाला था साम्यदंत मार्तंड अखबार

79 अंकों के प्रकाशन के बाद हिंदी पत्रकारिता का प्रथम समाचार पत्र उदंत मार्तंड दिसंबर,1827 में बंद हो गया था। युगल किशोर शुक्ल जी ने वर्ष 1850 में फिर साम्यदंत मार्तंड के नाम से समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया था, जो 1852 में बंद हो गया। युगल किशोर शुक्ल का जन्म 17 मई,1788 में हुआ था, जबकि निधन 1853 में हुआ। निधन तक उनके वापस कानपुर लौटने का उल्लेख नहीं मिलता है।

कानपुर से हिंदी के इन पत्र-पत्रिकाओं का भी हुआ प्रकाशन

कानपुर के नौघड़ा व सवाई मान सिंह का हाता से 15 मार्च 1833 में पंडित प्रताप नारायण मिश्र के संपादन में ब्राह्मण हिंदी समाचार पत्र।

- जूही में स्वदेशी मिल के सामने स्थित बाथम के हाता से 1903 से 1921 तक बैसवारा क्षेत्र के दौलतपुर रायबरेली के मूल निवासी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादकत्व में हिंदी पत्रिका सरस्वती।

- कानपुर के बाबू नारायण प्रसाद अरोड़ा, शिव नारायण मिश्र, गणेश शंकर विद्यार्थी और कोरोनेशन प्रेस के मालिक यशोदानंदन शुक्ल के द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी के संपादकत्व में नौ नवंबर 1913 को फीलखाना से हिंदी अखबार प्रताप का प्रकाशन। भगत सिंह भी इसमें 23 दिन तक बतौर पत्रकार काम करते रहे थे। वह बलवंत नाम से लिखते थे।

मध्यप्रदेश के खंडवा से प्रकशित हिंदी पत्रिका प्रभा का फीलखाना से 1917 से प्रकाशन और 1923 में बंद। संपादन गणेश शंकर विद्यार्थी, देवदत्त शर्मा, श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल, माखनलाल चतुर्वेदी व बालकृष्ण शर्मा नवीन करते थे।

पंडित रमाशंकर अवस्थी ने वर्ष 1920 से सिविल लाइंस से दैनिक वर्तमान पत्र विजयदशमी के दिन से निकाला था।

हिंदी मनोरंजन पत्र बंगाली मोहाल कानपुर से लब्धप्रतिष्ठ कथाकार विश्वभंरनाथ शर्मा कौशिक ने वर्ष 1911 से शुरू किया था।

1942 में विजयदशमी से रामराज्य पत्र का प्रकाशन। पहले संपादक राघवेंद्र और फिर रामनाथ गुप्त बने। कार्यालय और प्रेस आर्यनगर में था। ⓘ

(लेखक : शिवा अवस्थी, उप राष्ट्रपति से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार, कानपुर-उप्र)

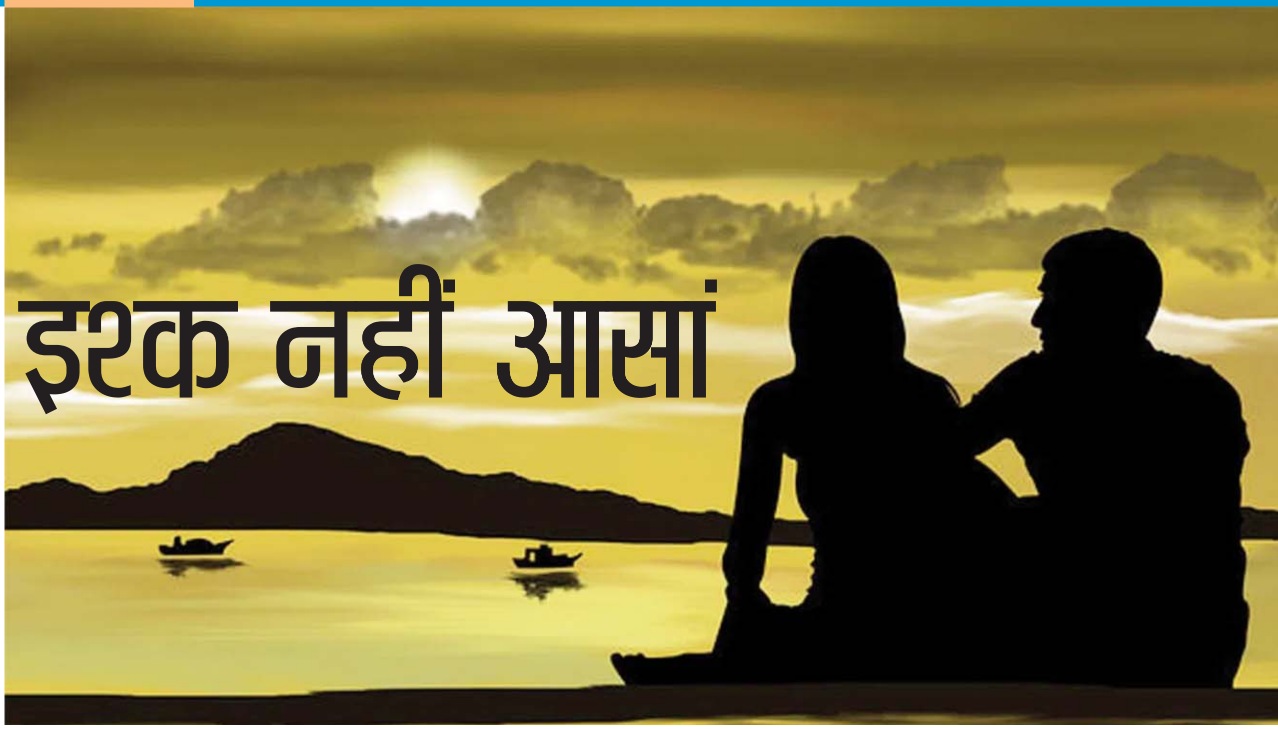

इश्क नहीं आसां

प्रेम जनमेजय

सब्जी मंडी की भीड़ है। एक दूसरे से सटकर खड़े होने का प्राकृतिक अवसर। लड़का लड़की को छेड़ नहीं पा रहा है। लड़का उदास खड़ा है। लड़की छिड़ नहीं पा रही है। लड़की भी उदास खड़ी है। लड़का सब्जी खरीद रहा है। लड़की भी सब्जी खरीद रही है। दोनों केवल सब्जी खरीद रहे हैं। भाव पूछ- पूछकर सब्जी खरीद रहे हैं। पैसा देकर सब्जी खरीद रहे हैं। पैसा है पर छेड और छिड़ नहीं पा रहे हैं।

एक पुलिसवाला भी सब्जी खरीद रहा है। वह वर्दी पहने सब्जी खरीद रहा है। वह थैला भर 'बेभाव' सब्जी खरीद रहा है। पुलसिये की सहधर्मिणी प्रसन्न होगी । वर्दी उदास नहीं है। सब्जी वाला उदास है। वर्दी वाला सब्जी खरीदने के साथ- साथ ड्यूटी भी बजा रहा है। पुलसिये की नजर लड़के पर है। भीड़ बड़ती है। बड़ती भीड़ धक्का-मुक्की करती है। जैसे सत्ता में आई पार्टी में देशसेवकों की भीड़ जब बढ़ती है तो धक्का-मुक्की करती है। लड़का लड़की से टकरा जाता है। लड़का लड़की को तीन बार सॉरी बोलता है। लड़की तीन सॉरी कबूल करती है। पर पुलिस वाला नहीं करता है। वह लड़के का कॉलर पकड़ लेता है- साले, लड़की से चिपकता है, उसे छेड़ता है? तेरी तो...' पुलिसवाला सब्जी का थैला छोड़ हाथ में डंडा पकड़ लेता है। ड्यूटि फर्स्ट हो जाती है। सब्जी तो मिल ही जाएगी, छेड़छाड़ का केस आजकल गंजे के सर में बाल या फिर किसान के घर खुशहाली जैसा हो गया। साले सब मजनूं सावधान हो गए हैं। सब्जी मंडी में छेड़ते -छिड़ते नहीं हैं, किसी मॉल में सुरक्षित छिड़न -छिड़ाई करते हैं। देश के सेवक भी तो देश के साथ संसद में सुरक्षित छिड़न- छिड़ाई करते हैं।

लड़का हकलाता है। पुलिस को सामने देखकर हर गरीब हकलाता है। लड़का बोला, 'नहीं इंस्पेक्टर साहब, वह तो भीड़ ने धक्का मारा और मैं...'

'**साले, जुलाई महीने में हमारा अप्रैल फूल बनाता है।** भीड़ ने तो हमे भी धक्का दिया, हम तो नहीं चिपके बहन के... हम मां बहनों की इज्जत करना जानते हैं -- तेरी तो मां की...'

'**नहीं, इंस्पेक्टर साहब !**'

'अबे हम इंस्पेक्टर नहीं हैं, साधारण पुलिसवाले हैं। हमें मक्खन मत लगा। जानता है कि थाने में इंस्पेक्टर का सेवा शुल्क क्या है? सस्ते में तो हम ही निबटा सकते हैं। चल लौंडिया को छेड़ने के जुर्म में थाने ...'

'**साहब! लड़की से पूछ लो हमने नहीं छेड़ा।**'

पर जिस लड़की से पूछना था, वह गायब थी। लड़की मोहल्ले में अपनी इज्जत बचाने के लिए गायब थी। लड़की में राजनीतिक चेतना नहीं थी इसलिए सीन से गायब हो गई। राजनीतिक चेतना होती तो थाने जाती और अगला चुनाव लड़ती।

लड़की थाने जाने से बच गई। लड़की देश की भावी नेता होने से बच गई। लड़की काजर की कोठरी में जाने से बच गई।

और लड़का? लड़का भी थाने में जाने से

बच गया। उसने बीच में ही मामला सुलटा लिया। पुलिस वाले ने माता रानी की जय बोली। उसने बाई वन गेट वन फ्री की शैली में सब्जी का थैला लिया और घर की जिम्मेदारी निभाने चल दिया।

मैंने लड़के के कंधे पर सहानुभूति का हाथ रखा- कोई नहीं ...

लड़का भड़का हुआ था। लड़का पुलिस वाले पर नहीं भड़क सकता था, मुझपर भड़क गया। लड़का जानता था कि जितना पुलिसवाले से भड़केगा, उतना ही सेवाशुल्क देना होगा। चाहे वह रोज सब्जी खरीदने के पैसे देता है पर सब्जी वाला गवाही उसके खिलाफ देगा। यह वैसे ही है जैसे पार्टी में उपेक्षित पार्टी सेवक पार्टी से भड़क नहीं सकता, भड़ककर संसद की जगह प्रजा पर चप्पल चला देता है।

लड़के ने मुझपर शब्दी चप्पल चलाई,'क्या कोई नहीं... मैंने तो छेड़छाड़ का छे भी नहीं किया और... प्रेम प्यार को कोई ब्लड प्रेशर हो गया है कि उसका नमक बंद कर दिया गया है। बिना छेड़छाड़ के प्यार हार्ट पेशंट का भोजन है। आप तो सठिया चुके हैं। आपका दिल तो न्यायालय हो गया है, सुन्न। सब जगह पट्टी बांधे हुए है। आपका जवान दिल तो स्वर्णिम अतीत हो गया है।''

'नहीं बेटा ऐसी बात नहीं है। हमारा दिल भी जवानी झेल चुका है। हम जन्नत की हकीकत जानते हैं। पर लड़की से छेड़छाड़ करना अच्छी बात नहीं है... देखो कोई लड़की सेफ नहीं है...'

'हे बूढ़े दिल, छेड़छाड़ और बलात्कार में अंतर होता है। वैसे लड़की के साथ छेड़छाड़ करना राष्ट्रीय अपराध हो गया है और राष्ट्र के साथ छेड़छाड़ करना ...। देश के साथ छेड़छाड़ नहीं बलात्कार हो रहा है, पर ...। देश में बंदी-युग आरंभ हो गया है। पहले नोटबंदी, फिर शराबबंदी मीटबंदी और अब छेड़छाड़ बंदी। इश्क को भी साला शाकाहारी कर दिया गया। इश्क में भी आतंकावादी आ गए हैं। अब तो लड़की छेड़ने का मन हो तो थाने में एप्लिकेशन देनी पड़ेगी। टू द इंस्पेक्टर सर, क्या मैं फलां इलाके में फलां समय के लिए फलां लड़की को छेड़ सकता हूं। प्लीज ग्रांट मीं छेड़छाड़ , एंड ओब्लाईज। यूअरस फेथफुली, मजनूं। थाने में भी रेटलिस्ट लग जाएगी। पांच मिनट छेड़ने के लिए 500 और...। जाईए सर आपने शाकाहारी प्यार का महत्व किसी और को समझाईए, पुलिसवाला मेरी जेब खा चुका, आप मेरा भेजा न खाईए।, यह कहकर वह चला दिया। मैं भी चल दिया।

आगे बढ़ा तो देखा आज का कवि उदास है। प्रेमगीत न लिख पाने के कारण कवि उदास है। प्रेमी-प्रेमिका का इश्क मशीनी हो गया है, कवि उदास है। गेहूं के साथ घुन पिस रहा है, कवि उदास है। इश्क फेसबुकिया और व्हाट्स ऐपी हो गया है, कवि उदास है।

कल का कवि भी उदास है। रसखान उदास है। अब वह नहीं गा रहा है- मानुष हौं तो वही रसखान...। किसी प्रेमी का ब्रज में बसना खतरे से खाली नहीं है। आज के कृष्ण की गोपिकाओं से छेड़छाड़ खतरे से खाली नहीं है। इसलिए वे कह रहे हैं- प्रेम कठिन सब ते सदा।'

और चचा गालिब भी कह रहे हैं - रहिए अब ऐसी जगह...।'

मैं चचा गालिब के सुर में अपना 'अ' सुर मिला रहा हूं-

यह इश्क नहीं आसां बस इतना समझ लीजै
सामने थाना है और इश्क लड़ाना है।

भूमिका यादव ने 19 की उम्र में रच डाला इतिहास

फैशन की दुनिया में कई बार लोग गोरेपन को ही खूबसूरती मान लेते हैं। लेकिन हाल ही में रायपुर के रहने वाली 19 साल की इस लड़की ने इस पुरानी सोच को पूरी तरीके से खत्म कर दिया है। दरअसल हम बात कर रहे हैं भूमिका यादव की जिन्होंने रातों-रात लोगों के बीच एक खास जगह बनाई और वायरल क्वीन बन गई। दरअसल उनकी पहचान उनका सांवला रंग नहीं बल्कि आत्मविश्वास है। उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े फैशन मंच पर अपना जादू बिखेर दिया।जानकारी के लिए आपको बता दें की भूमिका यादव ने पिछले साल परिस फैशन वीक में लग्जरी फैशन ब्रांड शैनेल (चैनल) के लिए अपना रैंप डेब्यू किया और इतिहास रच दिया।

दूसरी प्रेग्नेंसी के ऐलान के बाद स्पॉट हुए रणवीर-दीपिका

बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण इन दिनों अपनी दूसरी प्रेग्नेंसी को लेकर छाई हुई हैं। कपल में दूसरी बच्चे के आने की न्यूज शेयर कर अपने फैंस को बेहद एक्साइडेट कर दिया है। इस एक्साइटमेंट में बीच रणवीर-दीपिका हाल ही में पहली बार साथ में स्पॉट हुए।इस स्टार कपल को पैपराजी में मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया। इस दौरान रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण दोनों ही बेहद स्टाइलिश लुक में दिखाई दे रहे थे। दीपिका ने ब्लू कलर की ढीली-ढाली शर्ट पहनी थी, पर उसमें उनका बेबी बंप साफ नजर आ रहा था।

इमरान हाशमी की इस हसीना का 21 साल में बदला लुक

इमरान हाशमी की ऐसी काफी सारी फिल्में है और गाने हैं जो लोगों के बीच में आज भी काफी पॉप्युलर है। इसी लिस्ट में इमरान हाशमी की फिल्म 'जहर' भी काफी ज्यादा पॉपुलर हुई थी। जिसका गाना 'अगर तुम मिल जाओ' आज भी लोगों को काफी पसंद आता है।लेकिन अगर तुम मिल जाओ गाने में इमरान हाशमी के साथ में एक अभिनेत्री नजर आई थी जिन्होंने अपनी खूबसूरती और अदाओं से लोगों को तो इंप्रेस किया ही था, लेकिन उनकी एक्टिंग भी बहुत शानदार थी। दरअसल उनका नाम उदिता गोस्वामी है।

आज के समय में उदिता गोस्वामी ने बड़े परदे से दूरी बना ली है और अपनी निजी जिंदगी में वह काफी व्यस्त है। लेकिन हाल ही में उनका स्पॉट किया गया है। इंस्टा बॉलीवुड ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट से उनकी कुछ लेटेस्ट तस्वीरों को शेयर किया है। इन तस्वीरों के दौरान उदिता गोस्वामी का लुक काफी बदला हुआ नजर आ रहा है लेकिन उनकी खूबसूरती पहले से और भी ज्यादा बढ़ गई है।

उन्होंने खुद को काफी मेंटेन किया हुआ है। लेकिन आपको बता दें कि वह सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं और कुछ ना कुछ शेयर करती हुई भी नजर आती हैं। इसके अलावा विद्या कार्तिक आर्यन और तृप्ति डिमरी के साथ भूल भुलैया 3 में भी नजर आएंगी।

IIT JEE | NEET | BOARDS

JEE (Main+Advanced) | NEET | XI-XII Boards

Prayagraj's Most Trusted & Experienced Faculties for

RESULTS + CONCEPTS

Vinay Mehrotra Sir
Maths
Alumni-IIT Kanpur
25+Years Experience
Ex. Faculty -Unacademy, 360Degree

Er. R. K. Singh Sir
Physics
20 + Years Experience
Ex. Faculty -Aakash & Unacademy

Dr. Amit Tripathi Sir
Chemistry
20 + Years Experience
Ex. Faculty -JRS, Resonance, Unacademy
Sai Study Centre & ATC

Er. Shubham Gupta Sir
Chemistry
15 + Years Experience
Ex. Faculty -Career Point Kota
Unacademy & Resonance

Dr. Mahatab Alam Sir
Biology
15 + Years Experience
Ex. Faculty - Med Jee & Unacademy

- AI Driven **BEHAVIOUR INTELLIGENCE SYSTEM**
- Syllabus Completion with **Structured Revision.**
- **Doubt Support** is a Priority, Not a Formality.
- Transparent Teaching System.
- Consistency in Faculty (No Frequent Changes)
- Experienced Faculty Team With **5000 + Selections** in **JEE & NEET.**

SANGAM
EdTech
Where Knowledge Meets Direction

136-A/3/8, Tashkand Marg
Civil Lines, Prayagraj
Mobile : 8354010935

Admission Open

RNI No. : UPBIL/25/A0683

SMART- MODULAR NICU (Level -I, II & III)

Collaborated with

Cloudphysician

Real Time Critical Care for Neonatal & ICU Patients

Dr. Swapana, DM (Neonat.)

Dr. N. Mishra, DCH

Dr. Harshal, MD (Pedia, F-Neonat)

Dr. S. Patel, DCH

CASHLESS TREATMENT

BAJAJ | Allianz

SBI general INSURANCE
SURAKSHA AUR BHAROSA DONO

CGHS/CAPF

Chola MS GENERAL INSURANCE

SOMPO

ADITYA BIRLA CAPITAL HEALTH INSURANCE

TATA AIG LIFE
A new look at life

Medi Assist
Medi Assist Insurance TPA Pvt. Ltd.

FUTURE GENERALI
TOTAL INSURANCE SOLUTIONS

कम खर्च | बेहतर इलाज | अत्याधुनिक सुविधायुक्त

Dr. प्रीति

मैटरनिटी सेन्टर

मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल

सरायतकी, झूंसी, प्रयागराज ● मोबाइल : 9336098626